महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचाार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 22 | मुंबई, 16 दिसंबर से 31 दिसंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

बिना ब्याज कर्ज की सिफारिश चीनी उद्योग पर शरद पवार नरम

दिल्ली शरद पवार ने चीनी उद्दोग के लिए को 7,200 करोड़ रुपये के बिना ब्याज कर्ज पैकेज सहित अनेक राहतों की सिफारिश की है. चीनी मिलों को किसानों के गन्ना बकाये का भुगतान करने के लिये बैंकों से दिये जाने वाले 7,200 करोड़ रुपये के कर्ज पर सरकार की तरफ से 12 प्रतिशत की ब्याज सहायता (सब्सिडी) दिये जाने की भी सिफारिश की गई है. प्रधानमंत्री की गठित समिति ने मिलों के कर्ज को भारतीय रिजर्व बैंक के मानदंडों के अनुरूप नये सिरे से तय करने, 40 लाख टन तक कच्ची चीनी के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन देने, बफर स्टॉक स्थापित करने और इसके अलावा पेट्रोल में इथनॉल के सम्मिश्रण की मात्रा को दोगुना कर 10 प्रतिशत करने की सिफारिश भी की है. समिति ने, हालांकि फिलहाल चीनी आयात शुल्क में तत्काल वृद्धि की संभावना से इंकार किया है. संकटग्रस्त चीनी उद्दोग के लिए राहत पैकेज की घोषणा करते हुए पवार ने कहा कि बैंक चीनी उद्योग को 12 प्रतिशत ब्याज दर पर 7,200 करोड़ रुपये का कर्ज प्रदान करेंगे जिसमें शर्त यह होगी कि इस धन का इस्तेमाल किसानों के बकाये के भुगतान के लिए किया जायेगा. ब्याज सहायता 12 प्रतिशत बैठक के बाद उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि कुल ब्याज सहायता 12 प्रतिशत होगी. इसमें से 7 प्रतिशत का भुगतान चीनी विकास कोष से किया जायेगा जबकि 5 प्रतिशत भारत सरकार की ओर से होगा. उन्होंने कहा कि चीनी मिलों को पांच वर्षों में कर्ज का भुगतान करना होगा लेकिन पहले दो वर्ष तक पुनर्भुगतान पर छूट की अवधि होगी. उन्होंने कहा कि इन उपायों पर अंतिम निणर्य मंत्रिमंडल द्वारा अगले दो सप्ताह में किया जायेगा. बैठक में वित्त मंत्री पी चिदंबरम, पेट्रोलियम मंत्री वीरप्पा मोइली, खाद्य मंत्री के वी थॉमस, नागर विमानन मंत्री अजित सिंह मौजूद थे. बैठक में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के मुख्यमंत्री भी उपस्थित थे. तमिलनाडु की ओर से प्रदेश का प्रतिनिधित्व प्रदेश के मुख्य सचिव शीला बालाकृष्णन कर रहे थे.

आर्गेनिक लंच का आयोजन

जयदीप माथुर

जयपुर एम् आर मोरारका -जी डी सी रूरल डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन की तरफ से जयपुर के गणमान्य लोगो के लिए ई पी मुग़ल गार्डन में आर्गेनिक लंच का आयोजन रविवार दिनांक 15 दिसम्बर 2013 को किया गया . इस अवसर पर शहर के लोगो ने शुद्ध स्वास्थ्यवर्धक एवं पोष्टिक गुणो से भरपूर स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया . इस भोज का लक्ष्य आमजनो में रसायन एवं कीटनाशक रहित खाद्य पदार्थो के प्रति जागरूकता को बढ़ाना था . आज जिस तरह से बढ़ते शहरीकरण में लोग जाने अनजाने रसायनयुक्त खाद्य पदार्थो का सेवन कर रहे रहे हे उस ओर मोरारका आर्गेनिक लंच का आयोजन इसके लक्ष्यानुसार अवश्य ही एक सराहनीय कदम है, मोरारका 'डाउन टू अर्थ ' आर्गेनिक स्टोर के स्टाल में लोग इसके स्वस्त्यावर्धक खाद्य पदार्थो के प्रति जानकारियाँ लेते नज़र आये.

खरपतवार नियंत्रण करें गेहूँ के खेतों में

दिल्ली कृषि विभाग ने किसानों को गेहूँ की फसल में समय पर खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी है। विभाग का कहना है कि किसानों को कृषि विशेषज्ञ की सलाह से दवाई का इस्तेमाल करना चाहिए। खरपतवार की मात्रा अधिक हो तो खेत में पैदावार पर असर पड़ता है। इसलिए किसानों को ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए।

गेहूँ की फसल में खरपतवार नियंत्रण दवाई को हर साल बदलना चाहिए। एक खरपतवार नाशक दवा के लगातार इस्तेमाल

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'किसान' का शुभारम्भ

पुणे में 13 दिस.को किसान मेला प्रारम्भ हुआ,जहाँ देश की जानी मानी कम्पनियों ने भाग लिया मेले मे किसानो की भारी उपस्तिथी , किसानो की जगरुकता बता रही थी !कि वह बाज़ार मे आने वाले नए उत्पाद व नयी तकनीक को लेकर कितने उत्साहित है महिन्द्रा के गजानन व तुहार ने सृष्टि एग्रो के संवादाता को अपने नये उत्पाद के बारे मे जानकारी दी, साथ ही सोनालिका के विजय ठाकुर, एसपी पम्पस के प्रजापति व क्लास इंडिया लिमिटेड के राजेश ने किसान व खेती मे आने वाले बदलाव के बारे में बताया

खाद्य सुरक्षा पर विकसित देशों का प्रस्ताव भारत को स्वीकार नहीं

दिल्ली खाद्य सुरक्षा के मामले में विकसित देशों की ओर से प्रस्तुत अंतरिम समाधान को खारिज करते हुए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री आनंद शर्मा ने डब्लूयूटीओ की 9वीं मंत्रिस्तरीय बैठक से पहले सोमवार को जी-33 देशों के समूह की बैठक में एक बयान में भारत की चिंताओं को मजबूती से रखते हुए कहा कि खाद्य सुरक्षा का मामला भारत के लिए न केवल एक संवेदनशील मुद्दा है बल्कि यह सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। शर्मा ने कहा कि भारत में खाद्य सुरक्षा के मुद्दे पर राष्ट्रीय आम सहमति है और सभी राजनीतिक दल इस पर एक राय रखते हैं ऐसे में इस समय जो अंतरिम समाधान सुझाया जा रहा है उस समाधान को स्वीकार करना हमें मुश्किल होगा। उन्होंने कहा कि खाद्य सुरक्षा के अधिकार की डब्लूयूटीओ के मंच पर किसी भी चुनौती से अनिवार्य तौर पर रक्षा

(शेष पृष्ठ २ पर)

हुए वारे-न्यारे जुगाड़ से

मध्य प्रदेश कोई भी आविष्कार या इनोवेशन कभी औपचारिक पढ़ाई या डिग्री का मोहताज नहीं रहा। बस, जिसने जरूरत महसूस की उसी ने नया खोज लिया। इसी की मिसाल हैं मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के युवा किसान रोशनलाल विश्वकर्मा। बारहवीं तक आट्र्स विषयों से शिक्षित रोशनलाल ने नयी विधि से गन्ने की खेती शुरू की जिसमें बीज के तौर पर गन्ने की गांठें ही काटी जाती थी, पूरा गन्ना नहीं। अलग-अलग गांठें (बाड्सा) निकालने के लिये लेबर खर्च काफी बैठ जाता था। इसी

(शेष पृष्ठ २ पर)

FAI की सेमिनार

दिल्ली, फर्टिलाइज़र एसोसियशन ऑफ इंडिया द्वारा वार्षिक सेमिनार दिल्ली मे आयोजित हुई विश्व की नामी कंम्पनियों ने भाग लिया शरद पवर ने सेमीनार को सम्बोधित किया के. वी. थॉमस ने भी अपनी उपस्तिथि दर्ज करायी

महंगाई से राहत दालों की कीमत कम

दिल्ली, खाद्य महंगाई के बढ़ते दौर में दालों ने लोगों को बड़ी राहत दी है। दालों की महंगाई इस साल अप्रैल से अक्टूबर के बीच गिरकर -4.8 फीसदी रही है, जो पिछले साल इसी अवधि में 23 फीसदी थी। दाल कीमतें कम से कम रबी सीजन के अनुमानित बंपर उत्पादन के बाजार में आने तक नीचे रहेंगी। हालांकि दालों की महंगाई मांग में इजाफे और किसानों के उत्पादन बढ़ाने या न बढ़ाने पर निर्भर करेगी। चालू वित्त वर्ष के दौरान भारत में खाद्य महंगाई लगातार बढ़ रही है, जो अक्टूबर में 18.2 फीसदी बढ़ी है। महंगाई में तेजी की मुख्य वजह चावल, फल, सब्जियों और एनिमल प्रोटीन (अंडे/मांस/मछली) की कीमतों में तेजी आना है। हालांकि अप्रैल से अक्टूबर के दौरान औसत खाद्य मुद्रास्फीति १३.३ फीसदी रही है। हालांकि सभी खाद्य उत्पादों की कीमतों में तेजी नहीं आई है। दालों की कीमतों में गिरावट रही है। चीनी की कीमतें भी अक्टूबर में 6.9 फीसदी गिरी हैं, जो सितंबर 2012 में 18.4 फीसदी बढ़ी थीं। खाद्य तेल की कीमतें भी अक्टूबर में 0.7 फीसदी गिरी हैं, जबकि एक साल पहले की समान अवधि में ये करीब 10 फीसदी बढ़ी थीं। थोक मूल्य सूचकांक के आधार पर चालू वित्त वर्ष के पहले 7 महीनों में दालों की कीमतें 4.8 फीसदी गिरी हैं।

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटैंट मैनेजर चाहिए.

संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

किसान आत्मनिर्भर है?

स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी हमारे कृषि प्रधान देश के किसान आज भी निर्भर है !वो निर्भर है सरकारी तन्त्र पर साहूकारों पर अढ़ाती पर , देश को अन्न देने वाला किसान स्वयम् मूँह ताकता है!स्वतंत्रता इस मूल अवधारणा पर आधारित है कि व्यक्ति अपनी भावना को सही अभिव्यक्ति दे सके और अपनी आजीविका को सुचारु रूप से चला सके। इस नजरिए से समाज के प्रत्यके वर्ग और प्रत्येक व्यक्ति के वैधानिक अधिकार की रक्षा करना शासक का कर्तव्य हो जाता है। लोकतंत्र में वैधानिक अधिकारों की रक्षा इसलिए सुनिश्चित मानी जाती है क्योंकि सरकार किसको बनाना है यह जनता ही तय करती है। पर आजाद भारत में देखें तो किसानों के वैधानिक अधिकारों की रक्षा नहीं हो रही है। वह शासकीय तंत्र का गुलाम बनकर रह गया है।

किसान खुद अपनी जमीन के मालिक नहीं हैं, जिससे उन्हें हर तरह के शोषण का सामना करना पड़ता है। उन्हें हर छः महीने पर जमाबंदी रिकॉर्ड जमा कराना होता है, तो दूसरी तरफ कर भी देना होता है। यह व्यवस्था उपनिवेशवादी शासकों ने लागू की थी। तब से लेकर आज तक यह व्यवस्था कायम है। वहीं देखिए तो जमीन पर मालिकाना हक नहीं होने के साथ-साथ अपने उत्पादों को अपनी मर्जी से जहाँ चाहें वहाँ बेचने का अधिकार भी उनके पास नहीं है। उसके उत्पादन की बोली कोई और लगाता है। छोटा किसान जो सिर पर एक टोकरी में गोभी या टमाटर भरकर मंडी लाता है वह स्वयं नहीं तय करता कि उसकी गोभी या टमाटर किस भाव में बेचे जाएँगे। उस पर अढ़ाती पहले उसकी टोकरी से दो-चार गोभी या एक-दो किलो टमाटर निकाल लेता है, जिस पर वह अपना अधिकार समझता है।

फिर चार से आठ प्रतिशत तक अढ़ाती ली जाती है, जिससे एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केटिंग एक्ट की अवहेलना होती है। वैधानिक तौर पर मंडी कर के अलावा किसानों से कोई और कर नहीं लिया जा सकता पर अढ़ाती इतने मनमौजी कि वे खुलेआम किसानों से कर लेते हैं। यह सब प्रशासन की नाक के नीचे होता है पर इसकी ओर ध्यान देने वाला कोई नहीं है। दूसरी तरफ किसान यदि अपने इलाके की मंडी छोड़कर दूसरी मंडी में अपना उत्पाद बेचना चाहे तो उसे परमिट की जरूरत पड़ती है। साहूकारों के हाथों का खिलौना बनना किसानों की मजबूरी है। किसान यदि ट्रैक्टर, जनरेटर, थ्रेसर खरीदने, पशु खरीदने या किसी अन्य वजहों से बैंकों से कर्ज लेना चाहे तो उसके लिए इतनी लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है ये मूलभूत बातें हैं, जो किसानों को आजाद भारत में भी गुलाम बना देती हैं। किसानों की जमीनों पर अधिग्रहण करना सरकार के लिए सबसे आसान है। वह जब चाहे किसानों से जमीन लेकर पूँजीपतियों को बेच सकती है। सुप्रीम कोर्ट का साफ आदेश है कि किसानों की भूमि सार्वजनिक कार्यों के लिए अधिग्रहीत की जाए, पर पूँजीपतियों को जमीनें निजी उपयोग के लिए धड़ल्ले से दी जाती हैं। अधिग्रहण के समय किए गए वादे तक किसानों से पूरे नहीं किए जाते। और देखते ही देखते लहराते खेतो की ज़मीन बहुमंजिला इमारतो मे तब्दील हो जाती है! हम देश का विकास चाहते है तो सरकारो को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा

ऋतु कपिल (कार्यकारी संपादक)

किसान मित्र: भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में गेहूँ की फसल

डा0 बी0 एन0 सिंह एवं डा0 एस0 पी0 सिंह
अखिल भारतीय गेहूँ एवं जौ सुधार परियोजना
नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद–224 229 (उत्तर प्रदेश)

गेहूँ की फसल में काला, भूरा तथा पीला किट्ट (गेरुई), पत्ती झुलसा, अनावश्त कंडुआ, अनावष्त करनाल बन्ट, चूर्णित आसित तथा फ्लैग स्मट आदि बीमारियॉ लगती है। जिसमें से पूर्वी उत्तर प्रदेश में भूरा किट्ट, पत्ती झुलसा, करनाल बन्ट प्रमुखतया तथा नमी वाले स्कानों पर चूर्णित आसिता तथा कही कही अनावश्त कडुआ रोग भी गेहूँ की फसल को प्रभावित करता है। मार्च के महीने में गर्म एवं आर्द वातावरण पत्ती झुलसा रोग के विकास के लिये उपयुक्त पाया जाता है। अतः पूर्वी उत्तर प्रदेश झुलसा रोग के लिये हाट स्पाट सिद्ध हो रहा है। इस रोग से रोग जनित ;नेबमचजपइसमद्ध प्रजातियों में 50प्रतिषत तक उपज का नुकसान पाया गया है। पूर्वी उत्तर प्रदेष में गेहूँ की प्रमुख बीमारियों के लक्षण (पहचान) एवं उनके नियंत्रण के उपाय नीचे दिये जा रहे है–

1. गेहूँ का भूरा या पर्ण किट्ट रोग–

लक्षण: इस किट्ट के स्फोट या यूरिडिनियम पत्ती पर ही बनते है, परन्तु कभी–कभी पर्णच्छद और तने पर भी बन जाते है। यह स्फोट बहुत छोटे गोलाकार तथा पत्ती की सतह पर पक्तियों में न होकर अनियमित रुप से बिखरे हुये होते है। आरम्भ में यह पत्ती की ऊपरी सतह पर और बाद में दोनो सतहों पर बन जाते है और परिपक्वतावस्था में इनकी संख्या ध्वज पर्ण (फलैग लीफ) पर सर्वाधिक होती है। चूर्ण रुपी स्फोतों का रंग प्रारम्भ में चमकीला नारंगी होता है, परन्तु परिपक्व होंने पर यह भूरे रगं के हो जाते है। प्रारम्भ में यूरीडिनियम स्फोटों के चारों ओर के उतकों में कोई कोई बंदरगापन ;नहीं होता है, परन्तु बाद में पत्ती पूर्ण रुप से अथवा रुप से पीली पड जाती है। इस रोग से प्रभावित पौधो की मष्त्यु परिपक्व होने से पूर्व ही हो जाती है। पौधों की प्रकाश संश्लेशण क्रिया में बाधा पडने के कारण बाली में सामान्य स्वस्थ दानों के स्थान पर सिकुडे हुये दाने बनते है।

नियंत्रण:

1. भूरा किट्ट अवरोधी प्रजातियॉ जैसे एन डब्लू 1012, के 307, एच0डी0 2888, डी0बी0डब्लू0 16, डी0बी0डब्लू0 17, डी0बी0डब्लू0 39, एच0पी0 1744, एन0 डब्लू0 2036 सी0बी0डब्लू0 38 आदि की चयन बुआई हेतु करें।

2. यदि रोग के प्रबल होने की संभावना हो तो प्रोपीकोनाजोल (25 ई0सी) 1 ली0 रयायन को 1000 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें। प्रथम छिडकाव रोग के दिखाई देते ही तथा दूसरा छिडकाव यदि आवष्यक हो तो 15 दिन के अन्तर पर करें।

2. झुलसा रोग:

लक्षण: पत्तियों पर कुछ पीले व भूरापन लिये हुए अण्डाकार धब्बे तथा कुछ नाव के आकार के छोटे होते गहरे भूरे रंग के धब्बे प्रारम्भ में निचली पत्तियों पर

दिखायी देते है। धब्बों के चारों ओर का हरा रंग धुँधला हो जाने से एक संकरा हरिमाहीन क्षेत्र बन जाता है तो धब्बों के आकार के साथ बढता रहता है। ये छोटे–छोटे धब्बे आकार में बढ कर एक दूसरे मिल जाते है परिणाम स्वरुप पूरी पत्ती झुलस जाती है। प्रभावित पत्तियॉ सूख जाती है तथा पूरे झुलसे हुये खेत को दूर से ही देख कर पहचाना जा सकता है। रोग की उग्रावस्था में गहरे भूरे रंग के धब्बे पौधों की बालियों एवं सीथ पर भी देखे जा सकते है।

नियंत्रण:

1. बीज को थीरम या विटावैक्स नामक कवकनाषी से 3 ग्राम पति किलोग्राम की बीज की दर से उपचारित करके बोयें।

2. झुलसा रोग अवरोगी प्रजातियों जैसे एन0डब्लू0 1014, के0 9107, के 8027, एच0पी0 1731, एन0डब्लू0 1012, एच0डी0 2888, सी0बी0डब्लू0 38, एन0डब्लू 2036, यूपी0 2425 आदि का चुनाव बुआई हेतु करें।

3 प्रोपीकोनाजोल (25 ई0सी) कवक 1 लीटर रसायन को की 1 ली0 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रथम छिडकाव रोग की प्रारम्भिक अवस्था में और दूसरा छिडकाव 15 दिन के अन्तराल पर यदि आवश्यकहो तो करें।

3. करनाल बन्ट रोग:

लक्षण रोग के लक्षण उस समय तक प्रकट नहीं होते है जब तक कि बालियों में दाने नहीं बन जाते एक मूढ ेृ;जववसद्ध की सभी बालियों में संक्रमण नही होता है और एक संक्रमित बाली में कुछ दाने ही रोग ग्रसित होते है। सामान्यतः रोग ग्रसित बाली में कुछ दाने आंषिक रुप से अथवा पूर्ण रुप से काले चूर्णित पुंजों में बदल जाते है। कई अवस्थाओं में दाने का कंड के बीजाणु पुंज या सोरस के रुप में रुपांतरण पूर्ण रुप से नही होता, अपितु दाने का कुछ भाग ही नष्ट होता है और बाकी भाग स्वस्थ बना रहता है। रोग ग्रसित दानों से सडी मछली जैसीदुर्गन्ध आती है।

नियंत्रण:

1. बीज को बावीस्टीन या विटावैक्स 75 डब्लूपी0 3 ग्राम/कि0ग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोयें। जिस फसल में करलान बन्ट रोग का प्रकोप हो उसका बीज प्रयोग में न लायें।

2. बाली निकलने की अवस्था में खेत में अत्याधिक नमी न हो।

3. प्रापीकोनाजोल (25 ई0सी) की 1 ली0 मात्रा, 1000 ली0 पानी में घोल कर प्रति हैक्टयेर की दर से फसल की बूट लीफ अवस्था पर छिडकाव करें।

4. किट्ट रोग एवं झुलसा रोग से अवरोधी संस्तुत की गयी प्रजातियों का चयन बुआई हेतु करें।

4. अनावृत कंडुआ रोग:

लक्षण: इस रोग के लक्षण बाली निकलने पर ही दिखाई देते है। रोग ग्रस्त पौधों की बालियों में काला चूर्ण भरा रहता है और उसमें दाने नही बनते। रोग ग्रस्त बालियों में भरा काला चूर्ण वास्तव में रोग जनक कवक के असंख्य कंडबीजाणु होते है। प्रारम्थ में यह कूड बीजाणु तरुण स्पाइकिकाओं में चूर्णी समूह में बनते है और एक पतली, कोमल चॉदी जैसी सफेद झिल्ली से ढके रहते है। यह झिल्ली शिघ्र ही बालियों के आच्छद (सीथ) से बाहर निकलने के पहले ही फट जाती है और सामान्य स्वस्थ स्पाइकिकाओं के स्थान पर काला या गहरा जैतूनी भूरा चूर्ण समूह भरा दिखाई देता है। यह कंडबीजाणु शिघ्र ही बालियों से अलग हो जाते है और में सभी कंडबीजाणु वायु के झोकों से उड जाते है या की फौहारी से धुल जाते है जिससे पौधो मे बाली के स्थान पर केवल एक लुकीली सींक जैसी रैकिस नग्न वष्त के रुप में दिखायी देती है।

नियंत्रण:

1. सदैव रोगमुक्त प्रमाणित बीज का प्रयोग करे।

2. बीज को वाविस्टीन 50 डब्लू0पी0 या विटावैक्स 75 डब्लू0पी0 कवकनाषी रसायन से 3 ग्राम/कि0ग्रा0. की दर से उपचारित करके बोयें।

3. कंडुआ रोग अवरोधी नवीन प्रजातियॉ जो किट्ट एवं झुलसा रोग के लिये संस्तुत की गयी है इन प्रजातियों में कंडुआ रोग का प्रकोप नहीं होता है अतः उनका प्रयोग करें।

सरसों फसल में पाला एवं चेपा (माँहू) का प्रबंधन

डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

प्रश्न : पाले का निर्माण कैसे होता है इसका फसल पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर : सरसों जाडे की फसल है और इसे दिसम्बर तथा जनवरी माह में पाला प्रभावित करते है। शीत लहर में जब तापमान शून्य डिग्री सेल्शियस से नीचे गिर जाता है तथा आकाश साफ होने के साथ हवा रूक जाती है तो रात्रि को पाला पड़ने की सम्भावना रहती है। वैसे साधारणतः पाले का अनुमान दिन के वातावरण से लगाया जा सकता है।

सर्दी के दिनों में जिस रोज दोपहर से पहले ठण्डी हवा चलती रहे एवं हवा का तापमान जमाव बिन्दु से नीचे गिर जाये, दोपहर बाद अचानक हवा चलना बन्द हो जाये तथा आसमान साफ रहे, या उस दिन आधी रात के बाद से ही हवा रूक जाये तो पाला पड़ने की सम्भावना अधिक रहती है। रात को विशेषकर तीसरे एवं चौथे पहर में पाला पड़ने की सम्भावनाएं रहती हैं।

पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलसे हुए दिखाई देते हैं एवं झड़ भी जाते हैं। यहां तक कि अधपके फल सिकुड़ जाते हैं उनमें झुर्रियां पड़ जाती हैं एवं कई फल गिर जाते हैं। फलियों एवं बालियों में दाने नहीं बनते हैं। बन रहे दाने सिकुड़ जाते हैं। दाने कम भार के एवं पतले हो जाते हैं। उपज की गुणवत्ता गिर जाती है अतः इस समय कृषकों को सतर्क रहकर फसलों की सुरक्षा के उपाय अपनाने चाहिये।

प्रश्न : पाले के कुप्रभाव से सरसों फसल को बचाने का उपाय क्या है ?

उत्तर : जब पाला आने की संभावना हो तो सरसों के खेत के आसपास या मेड़ों पर उत्तरी पश्चिमी–दिशा से आने वाली ठण्डी हवा की दिशा में सॉय 8 बजे से प्रातःकाल तक बेकार पड़े गोबर एवं पुआल इत्यादि जलाकर धुंआ करते रहना चाहिए। धुंए की वजह से वायुमण्डल का तापमान कम नहीं होने पाता है ।

पाला पड़ने की सम्भावना को देखते ही फसल की सिंचाई करे। ऐसा करने से पौधों के आस–पास भूमि का तापमान कम नहीं होने पाता है।

सरसों के खेतों के बाहर सरसों से बडे पौधों की एक बाड लगाने से भी फायदा होता है क्योंकि इससे ठन्डी हवा सरसों पर सीधे तौर पर असर नहीं करती है।

इसके अलावा 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब के साथ 0.05 प्रतिशत डाई मिथाईल सल्फोऑक्साइड या 0.2 प्रतिशत डाई फॉलेटोन या 0.3 प्रतिशत मैन्कोजैब अर्थात एक लीटर गंधक के तेजाब के साथ आधा लीटर डाई मिथाईल सल्फोऑक्साइड या दो लीटर डाई फॉलेटोन या तीन किलोग्राम मैन्कोजैब का 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करते हैं तो फसल को पाले से बचाया जा सकता है।

प्रश्न . : सरसों को चेपा (माँहू) कीट से काफी नुकसान होता है इसके लिए क्या उपाय करना चाहिए ?

उत्तर: चैंपा या माँहू राई–सरसों का सबसे मुख्य कीट है। फूल निकलने से फसल पकने तक की अवधि में राई–सरसों में यह कीट आक्रमण करता है। फसल के पकाव के समय इस कीट के आक्रमण की सम्भावना ज्यादा रहती है। चैंपा/ माँहू फलियों से रस चूंस लेता है जिससे उपज तथा तेल की मात्रा में कमी हो सकती है। यह कीट कम तापमान और ज्यादा आर्द्रता पर ज्यादा बढता है। इसलिए जनवरी के अंत तथा फरवरी में इस कीट का प्रकोप अधिक रहता है।

चेपा खेत के बाहरी पौधों पर पहले आता है। अतः उन पौधों की संक्रमित टहनियों को तोड़कर नष्ट कर देवें। माँहू के परभक्षी कीट कोक्सीनेला, इन्द्रगोप, काइसोपा, सिरफिड़ मक्खी आदि को संरक्षण प्रदान करें। जब कम से कम 10 प्रतिशत पौधों पर 25–26 चेंपा प्रति पौधा दिखाई देवे तभी डाइमैथोएट 30 ई.सी. की 1 लीटर दवा को प्रति हैक्टेयर की दर से 600–800 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि दोबारा कीड़ों की संख्या बढ़ती है तो दोबारा छिड़काव करें।

प्रश्न : थायोयूरिया क्या है? सरसों फसल के लिए यह किस तरह उपयोगी है?

थायोयूरिया एक रसायन है जिसमें 42 प्रतिशत गंधक एवं 37 प्रतिशत नत्रजन पाया जाता है और जिसके 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव सरसों के 45 एवं 60 दिन की अवस्था पर करने से उपज को 15 से 25 प्रतिशत बढाना सम्भव हो सकता है।

थायोयूरिया रसायन सल्फर की उपस्थिति के कारण पौधों की आन्तरिक कार्यिकी में सुधार लाता है। इसके छिड़काव से पौधों की कोशिकाओं में सल्फाहाइड्रिल समूह की मात्रा बढ जाती है फलस्वरुप सूक्रोज ट्रान्सपोर्ट प्रोटीन अधिक सकिय रूप से शर्करा के संवहन को प्रभावित करती है तथा पौधों में दानों का भराव तीव्रता से होता है।

यही कारण है कि थायोयूरिया से उपचारित सरसों के पौधों में पुष्पकम के अन्तिम छोर पर स्थित फलियों में भी दाने बन जाते है, जबकि उनुपचारित पौधों में वे फलियां या तो झड़ जाती है या उनमें दाना नहीं बनता है। इस तरह थायोयूरिया के प्रयोग से पौधों मे फलियों की संख्या में वृद्वि होती है जो अन्ततः फसल की उपज को बढाने में निर्णायक सिद्व होती है। अधिक प्रभाव के लिए थायोयूरिया का छिड़काव दोपहर बाद करना उपयुक्त रहता है। गन्धक के सक्रिय रूप सल्फाहाईड्रिल समुह की उपस्थिति के कारण थायोयूरिया के छिड़काव से सरसों फसल को पाले की क्षति से भी बचाया जा सकता है।

खाद्य सुरक्षा पर ....

की जानी चाहिए।

जी-33 भारत समेत 46 देशों का एक समूह है जो अनाज की सरकारी खरीद और गरीब व कमजोर आबादी को खाद्य सहायता देने के अधिकार के मुद्दे को मिल कर उठा रहा है। अमेरिका और अन्य विकसित देश चाहते हैं कि भारत जैसे देश अपनी खाद्य सब्सिडी (एमएसपी और पीडीएस कार्यक्रम पर सरकारी सहायता) को मौजूदा नियमों के तहत कुल कृषि उत्पादन के 10 प्रतिशत तक सीमित रखे।

खरपतवार नियंत्रण...

से परिणाम कम हो सकता है। खेत में मंडूसी का बीज तीन साल तक खत्म नहीं होता। खेत में उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए डाली जाने वाली गोबर की खाद में भी मंडूसी का बीज सुरक्षित रहता है। जो समय आने पर खेत में उग जाता है।

किसान इस खरपतवार के प्रति जागरूक तो हैं, लेकिन कई बार लापरवाही सामने आती है। कई खेतों में तो मंडूसी के पौधे इतनी संख्या में होते हैं कि गेहूँ के पौधे नजर नहीं आते।

हुए वारे-न्यारे...

खर्च को कम करने के लिये रोशनलाल ने ठानी मशीन बनाने की। इन्होंने कृषि विशेषज्ञों, कृषि विज्ञान केंद्र से भी सलाह ली। ये खुद ही लोकल वर्कशॉप्स व टूल फैक्टरीज आदि में जा-जाकर अंततः जुगाड़बाजी से 'शुगरकेन बड चिपर' मशीन का इजाद सामने लाए। इस मशीन से बीज काटने के समय, लेबर व पैसे—तीनों की बचत संभव बनी। बकौल रोशनलाल जहां पहले एक आदमी एक दिन में हाथ से काटकर बहुत ही कम बीज निकाल पाता था वहीं मशीन के माध्यम से काम करके वह एक दिन में 350 बड्स निकाल लेता है, वह भी बिना थके। ष्ठऔर हाथ कटने के रिस्क से भी बचाव हुआ है बड चिपर से काम करके। हाल ही में इसके मोटराइज्ड वेरिएंट से तो एक दिन में एक आदमी 3000 बड्स प्राप्त कर सकता है। कुल मिलाकर टाइम और लेबर दोनों बचे हैं।

उनके मुताबिक, नये तरीके से यानी पहले पनीरी तैयार करके गन्ना रोपने की नयी पहले पनीरी तैयार करने वाली विधि अपनायी तो उसमें भी काफी रिस्क था। उसमें पानी की कुछ ज्यादा खपत हुई, तकनीक नहीं पता थी। किसान विज्ञान केंद्र का सहयोग लेना पड़ा। पर उसमें लागत 9-10 गुणा कम हुई तथा आम विधि की अपेक्षा 20 फीसदी ज्यादा फसल हुई। इसी तरह इस मशीन के लिए कृषि विज्ञान केंद्र से सलाह ली, लोकल वर्कशापों में,टूल/इंपलिमेंट निर्माण फैक्ट्रियों में चक्कर लगाये। अपना दिमाग भी लगा और इंजीनियर/मैकेनिक्स आदि से भी तकनीकी मदद ली। साल भर से ज्यादा समय लगा इसे बनाने में। इसका दूसरा उन्नत रूप बिजली की मोटर से चलता है, उसमें सिर्फ आदमी को गन्ना रखना होता है

खाद्य तेल सस्ते

दिल्ली खाद्य तेल के दाम 300-400 प्रति क्विंटल तक गिरे महंगाई के दौर में खाद्य तेलों की कीमतों में आई गिरावट से उपभोक्ताओं को राहत मिली है। घरेलू बाजार में महीने भर में खाद्य तेलों की कीमतों में 300 से ४०० रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट आ चुकी है। ब्याह-शादियों का सीजन चल रहा है, जिससे खाद्य तेलों में मांग तो अच्छी है लेकिन कुल उपलब्धता मांग के मुकाबले ज्यादा होने के कारण कीमतों में और भी गिरावट आने की संभावना है। दिल्ली वेजिटेबल ऑयल ट्रेडर्स एसोसिएशन के सचिव हेमंत गुप्ता ने बताया कि ब्याह-शादियों का सीजन चल रहा है इसलिए खाद्य तेलों में मांग तो बराबर बनी हुई है लेकिन मांग के मुकाबले उपलब्धता ज्यादा होने के कारण खाद्य तेलों की कीमतों में गिरावट बनी हुई है। घरेलू बाजार में महीने भर में खाद्य तेलों की कीमतों में करीब 300 से 400 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट आ चुकी है। हरियाणा के दादरी में सरसों तेल का भाव घटकर 720 रुपये, आरबीडी पामोलीन का 600 रुपये, क्रूड पाम तेल का 560 रुपये, राजकोट में मूंगफली तेल का 820-825 रुपये, इंदौर में सोया रिफाइंड तेल का भाव 705 रुपये और बिनौला तेल का

610 रुपये प्रति दस किलो रह गया। सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के अनुसार तेल वर्ष 2012-13 (नवंबर-12 से अक्टूबर-13) के दौरान खाद्य तेलों के आयात में 4.77 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल आयात 106.8 लाख टन का हुआ है जबकि पिछले तेल वर्ष के दौरान 101.9 लाख टन का हुआ था। पहली नवंबर को भारतीय बंदरगाहों पर आयातित खाद्य तेलों का 5.20 लाख टन का स्टॉक है जबकि 8.80 लाख टन खाद्य तेल पाइपलाइन में है। अत: कुल आयातित खाद्य तेलों का स्टॉक 14 लाख टन का है। अक्टूबर 2013 में आरबीडी पामोलीन का भाव भारतीय बंदरगाह पर 935 डॉलर प्रति टन है जबकि अक्टूबर 2012 में भाव 841 डॉलर प्रति टन था। कृषि मंत्रालय के अनुसार चालू रबी में तिलहनी फसलों की बुवाई बढ़कर अभी तक 74.74 लाख हैक्टेयर में हुई है जबकि पिछले साल इस समय तक 72.18 लाख हैक्टेयर में ही तिलहनी फसलों की बुवाई हुई थी। मंत्रालय के अनुसार पहले आरंभिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2012-13 में 353 लाख टन तिलहनों की पैदावार होने का अनुमान है

अमेरिका से भेजी जीएम मक्का की खेपें चीन ने रद्द की

दिल्ली, वैश्विक बाजार में मक्का के दाम गिरने का अनुमान जीएम पर सतर्कता चीन में पहुंची थी एमआरआई १६२ किस्म की मक्का चीन की सरकार ने अभी इस वैरायटी को मंजूरी नहीं दार 1.20 लाख टन की पांच अमेरिकी खेपें नामंजूर की गईं अन्य खेपों की कड़ी जांच होने की विशेषकों को आशंका दूसरे देशों को भी भेजी गई सिंजेंटा की इस किस्म की मक्का विशेषक का मत- इस बहाने चीन ने आयात पर अंकुश लगाया चीन ने अमेरिका से आयातित मक्का की पांच खेप नामंजूर कर दी है। यह मक्का जेनेटिकली मॉडीफाइड (जीएम) की ऐसी किस्म की है, जिसे चीन के कृषि मंत्रालय ने मंजूरी नहीं दी है।

एक सपने की उड़ान......

चम्बल फर्टिलाईजर्स एंड केमिकल्स लि.

भारत वर्ष के संभ्रांत बिरला परिवार में जन्मे श्री कृष्ण कुमार बिरला ने सन 1985 में चम्बल फ़र्टिलाईजर्स एंड केमिकल की स्थापना की. अपनी दूरदर्शिता एवं स्वच्छ राजनेतिक छवि के धनी श्री के के बिरला ने अपनी व्यवसायिक क्षमताओ का परिचय देते हुए फर्टिलिजेर्स , इंजीनीरिंग , मीडिया , फिनेंसिअल सर्विसेज , शिपिंग , टेक्सटाइल्स , शुगर , सूचना एवं संचार तकनीक क्षेत्रो में अपना वर्चस्व कायम किया जो आज के के बिरला के नाम से जाना जाता है सन 1985 में जुआरी इंडस्ट्रीज द्वारा अस्तित्व में आयी चम्बल फर्टिलिजेर्स एंड केमिकल लि कंपनी आज देश कि निजी क्षेत्र के स्वामित्त्व वाली सबसे बड़ी कंपनी मानी जाती हे राजस्थान के कोटा जिले के गड़ेपान में स्थित अपनी दो

उच्च तकनीकी निर्माण इकाइयों में ये कंपनी 20 लाख मेट्रिक टन सालाना यूरिया का उत्पादन कर रही हे समस्त भारत में अपने तेरह क्षेत्रीय कार्यालयो , 1700 से भी अधिक वितरकों एवं लगभग 20000 खुदरा विक्रेताओ के विशाल नेटवर्क के द्वारा भारत के ग्रामीण बाज़ारो में अपनी पकड़ बनाई हुयी है उन्नत कृषि एवं खेती को प्रोत्साहन देने के लिए कंपनी ने 'उत्तम बंधन ' नामक कृषि सलाहकार कार्यक्रम चला रखा हे जिसके तहत कंपनी के सलाहकार किसान सेमीनार , विभिन्न उत्पादों कि जानकारिया एवं फसल सेमीनार का आयोजन निरंतर करती रहती है

कंपनी अपनी एकल खिड़की योजना के अंतर्गत किसानो को अपने सभी उत्पाद उपलब्ध कराती हे जिनमे डी ए पी , एम् ओ पी , यूरिया एवं विभिन्न तरह के बीज एवं कीटनाशक अपने डीलर्स द्वारा उपलब्ध कराती हे. कंपनी ने मुख्यतया उत्तर भारत में विशेषतया कीटनाशक उत्पादों में अग्रणी स्थिति बनाये, रखी है ,

कंपनी का सबसे सराहनीय कदम नयी पीढ़ी के किसानो को अपनी वेबसाइट 'उत्तमकृषि.कॉम ' द्वारा मौसम की अनुकूल जानकारी , मौसम के अनुकूल फसलो की बुआई एवं उनके बचाव की जानकारी दिया जाना है चम्बल फ़जिलाइजर्स एंड केमिकल लि . का लक्ष्य उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों द्वारा देश की नंबर एक फ़र्टिलाइज़र कंपनी बनना है

श्री के के बिरला सरीखे व्यक्तित्व द्वारा स्थापित ये कंपनी आज श्री सरोज कुमार पोद्दार - अध्यक्ष , श्री श्याम सुंदर भारतीय -उपाध्यक्ष एवं श्री अनिल कपूर - प्रबंध निदेशक के कुशल एवं अनुभवी नेतृत्व में शानदार प्रदर्शन करते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है , साफ़ सुथरी छवि एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनि डॉ . के के बिरला ने निश्चय ही अपनी अलग पहचान बनाई हे एवं प्रसिद्धि पायी हे. उनके द्वारा स्थापित चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल लि कंपनी अपने मुकाम पर बढ़ती जा रही है

,ये श्री के के बिरला द्वारा देखे गए सपनो की एक सफल उड़ान ही तो हे......

जयदीप माथुर

केंद्र दे सकता है राज्यों को राहत अनाज वितरण खर्च में

दिल्ली, बड़ी पहल देश में 82 करोड़ लोगों को खाद्यान्न सुनिश्चित होगा सभी राज्यों में पीडीएस का कंप्यूटरीकरण अनिवार्य इससे असली लाभाथिर्यों को आवंटन किया जाएगा छह राज्यों में कंप्यूटरीकरण का कार्य लगभग पूरा खाद्य सचिवों की बैठक में वितरण खर्चों के बंटवारे पर विचार होगा केंद्र सरकार खाद्य सुरक्षा कानून के तहत चलाई जाने वाली योजना में खाद्यान्न के वितरण से जुड़े परिवहन सहित तमाम खर्चों में राहत दे सकती है। खाद्य सुरक्षा कानून पर गठित पांच राज्यों के खाद्य सचिवों की बैठक १३ दिसंबर को दिल्ली में होनी है, जिसमें राज्य सरकारों को राहत देने पर फैसला लिया जा सकता है। चार राज्य हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश खाद्य सुरक्षा कानून को लागू कर चुके हैं तथा पंजाब और कर्नाटक की राज्य सरकारों ने भी इसे लागू करने की तैयारी पूरी कर ली है। खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि खाद्य सुरक्षा कानून में खाद्यान्न के भंडारण, हैंडलिंग, परिवहन लागत और राशन दुकानदारों के कमीशन आदि जैसे मुद्दों पर कुछ राज्यों को आपत्तियां है। इनका हल निकालने के लिए केंद्रीय खाद्य सचिव की अध्यक्षता में गठित समिति की बैठक १३ दिसंबर को दिल्ली में होनी है। बैठक में अहम मुद्दा खाद्यान्न की हैंडलिंग और पविहन लागत का है। प्रमुख उत्पादक राज्यों से खपत राज्यों को खाद्यान्न की परिवहन लागत के साथ ही हैंडलिंग का वहन केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर भी कर सकती है। केंद्र और राज्य सरकार का इसमें अनुपात कितना हो, इस पर विचार-विमर्श किया जायेगा। समिति में हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और त्रिपुरा के खाद्य सचिवों को शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल और दिल्ली में खाद्य सुरक्षा बिल का कार्यान्वयन शुरू हो चुका है तथा पंजाब और कर्नाटक की राज्य सरकारों ने लागू करने की तैयारी पूरी कर ली है। अन्य राज्यों ने भी खाद्य सुरक्षा कानून को लागू करने की तैयारी शुरू कर दी है।

चीनी विनियंत्रण का फायदा किसानों और आम लोगों तक पहुंचाना चाहिए: के. वी. थॉमस

दिल्ली, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रोफेसर के. वी. थॉमस ने कहा है कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत सस्ती दरों पर चीनी आपूर्ति सुनिश्चित करने के

लिए केन्द्र सरकार ने प्रति वर्ष 3,000 करोड़ रुपए का अतिरिक्त सब्सिडी बोझ स्वैच्छा से अपने कंधों पर लिया है। अब चीनी उद्योग खासकर मिलों की जिम्मेदारी है कि वे इसका फायदा आम लोगों और गन्ना उत्पादक किसानों तक पहुंचाने की दिशा में काम करें। श्री थॉमस ने आज भारतीय चीनी मिल्स संघ की वार्षिक आम बैठक के उद्घाटन संबोधन में चीनी उद्योग में लाभ मिलने की समस्या, पूंजी प्रवाह और किसानों को गन्ने के बकाया भुगतान में हो रही देरी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि चीनी मिलों को अब अपने उत्पादों का विविधता लानी होगी। इस मामले में उनके मंत्रालय ने हाल ही में एक रिपोर्ट सौंपी है जिसमें गन्ने और चीनी के बेहतर उत्पादन के तौर-तरीकों पर विचार किया गया है। उन्होंने कहा कि इन सिफारिशों के क्रियान्वयन से निश्चित रूप से गन्ना उत्पादकों और चीनी मिलों को फायदा होगा और इससे चीनी उद्योग में और तेजी आएगी। उन्होंने घोषणा की कि मंत्रियों के समूह की सलाह के आधार पर उनका मंत्रालय चीनी उद्योग को तत्काल राहत देने जा रहा है। श्री थॉमस ने चीनी मिलों से अपने उत्पादों में विविधता लाने का आग्रह करते हुए कहा कि उन्हें बाजार का रूख देखकर ही उत्पाद तैयार करने चाहिए।

ग्वार गम निर्यात में फिर तेजी

दिल्ली, खरीफ सीजन में ग्वार का उत्पादन करीब 23 लाख टन और रबी समेत कुल 27.5 लाख टन होने विदेशी खाद्य और तेल खोज उद्योग से आई अच्छी मांग के चलते अक्टूबर में ग्वार गम का निर्यात अचानक बढ़ा है। इस साल अक्टूबर का निर्यात पिछले साल के इसी महीने से 85 फीसदी और सितंबर से 30 फीसदी ज्यादा रहा है। उद्योग के अधिकारियों का कहना है कि कीमतों के निचले स्तरों पर स्थिर होने की वजह से विदेशी कंपनियों से मांग और ऑर्डर आने शुरू हो गए हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान कृषि जिसों के निर्यात में ग्वार गम शीर्ष स्थान पर रहा है। इस साल भी निर्यात में मात्रात्मक लिहाज से बढ़ोतरी हो रही थी, लेकिन सितंबर में इसमें गिरावट आई है। वसुंधरा गम्स ऐंड केमिकल्स की मालकिन सुमन जैन ने कहा, 'तेल और खाद्य उद्योग में ग्वार गम की मांग अच्छी है। विशेष बात यह है कि दो वर्ष के अंतराल के बाद यूरोप और अमेरिका के खाद्य उद्योग में एक बार फिर मांग बढ़ी है। इस समय 50 फीसदी ग्वार गम का निर्यात तेल क्षेत्र को और 50 फीसदी निर्यात खाद्य उद्योग को होता है। अच्छी मांग की एक वजह कीमतों के निचले स्तर पर होना है। इस समय ग्वार गम की कीमत गिरकर 150 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई है और आने वाले महीनों में भी कीमतों में गिरावट से इनकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा ग्वार गम के विकल्पों की कीमतें भी ऊंची है, जिससे ग्वार गम की मांग बढ़ी है।' कुल मिलाकर कीमतों का रुझान का अनुमान है। यह 2012-13 में हुए उत्पादन 20 लाख टन से 32.5 फीसदी ज्यादा है। वर्ष 2012-12 में कुल उत्पादन 14.5 लाख टन था। इस तरह दो साल में ग्वार उत्पादन दोगुना हो गया है। मार्च 2012 में कीमतें 300 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई थीं, जो अब महज ५० रुपये प्रति किलोग्राम हैं। एग्रीवॉच के उपाध्यक्ष (सलाह) संतोष झंवर ने कहा, 'ग्वार गम की कीमतें पिछले डेढ़ महीने से स्थिर बनी हुई हैं, जिससे मांग बढ़ी है।' एक बड़ी ग्वार गम निर्यातक कंपनी से जुड़े अधिकारी ने कहा, 'ऑर्डर इसलिए आने लगे हैं, क्योंकि सीएमसी और एक्संथान की कीमतें ग्वार गम से 30 फीसदी ज्यादा हैं।' उन्होंने कहा कि जब ग्वार गम की कीमतें ज्यादा ऊंची थीं तो बहुत से भारतीय किसानों ने बुआई बढ़ाई थी और चीनी और ऑस्ट्रेलियाई किसानों ने भी ग्वार गम की परीक्षण के तौर पर बुआई की। हालांकि कीमतों मे तेजी से गिरावट के चलते अन्य देशों के किसानों की इसकी बुआई में रुचि खत्म हो रही है।

किसानों ने घटाई कपास की आवक

दिल्ली इस साल देश में कपास उत्पादन ज्यादा रहने का अनुमान जताया जा रहा है, लेकिन फसल की आवक पिछले साल की तुलना में ३० से 35 फीसदी कम बनी हुई है। इसकी वजह यह है कि किसान वर्तमान कीमतों पर अपनी फसल बेचने को तैयार

नहीं हैं। पिछले साल इस महीने में दैनिक आवक 2,10,000 से 2,25,000 गांठ थी, जो इस साल 1,60,000 से 1,70,000 है। देश के सबसे बड़े कपास उत्पादक राज्य गुजरात में इस समय आवक 55,000 से 60,000 गांठों के बीच है, जो एक साल पहले 85,000 से 90,000 गांठ थी। अहमदाबाद की अरुण कुमार ऐंड कंपनी के अरुणभाई दलाल ने कहा, 'देश में कम आवक की एक वजह सीजन में देरी होना भी है।' विशेषज्ञों ने कहा कि किसान कीमत 1,000 रुपये प्रति 20 किलोग्राम मांग रहे हैं और वे कीमतों के स्तर पर आने तक इंतजार करने को तैयार हैं। सीजन की शुरुआत में कीमत 48,000 रुपये प्रति कैंडी (356 किलोग्राम) थी, जो गिरकर अब 38,500 से 39,000 रुपये पर आ गई है। ज्यादा उत्पादन के अनुमान और कम मांग के चलते सीजन की शुरुआत से लेकर अब तक कीमतें 9,000 रुपये प्रति कैंडी गिर चुकी हैं।

गुजरात के विभिन्न बाजारों में कच्चे कपास की कीमत 930 से 960 रुपये प्रति किलोग्राम थी।

इंटरनैशनल कॉटन एडवाइजरी कमेटी (आईसीएसी) के अनुसार पिछले तीन सीजन में कीमत की स्थिति को देखते हुए 2013-14 में वैश्विक उत्पादन वैश्विक खपत से ज्यादा रहने का अनुमान है। वर्ष 2013-14 में वैश्विक उत्पादन 2.56 करोड़ टन अनुमानित है।

चने की कीमतों में गिरावट

दिल्ली, बेहतर घरेलू मांग के बावजूद चने की कीमतों में गिरावट का दौर खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। हाजिर और वायदा बाजार में चना अपने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी)से भी नीचे बिक रहा है। इस समय किसानों को पिछले साल की अपेक्षा चने में प्रति क्विंटल करीब 2,000 रुपये का घाटा सहना पड़ रहा है। लगातार कीमतों में गिरावट के बावजूद

किसान एक बार फिर चने पर दांव लगा रहे हैं। चालू रबी सीजन में चने का रकबा एक बार फिर रिकॉर्ड बनाने की ओर अग्रसर है। हाजिर और वायदा दोनों जगह चने के बुरे दिन खत्म होने का नाम नहीं ले रहे हैं। हाजिर बाजार में चना पिछले तीन साल के निचले स्तर पर पहुंच गया है। पिछले एक महीने में चने की कीमतों में करीब 10 फीसदी और एक साल के अंदर करीब 40 फीसदी की गिरावट हो चुकी है। एनसीडीईएक्स पर चना 2,923 रुपये प्रति क्विंटल के निचले स्तर तक पहुंच गया। हाजिर बाजार में चना 2,900 रुपये प्रति क्विंटल से भी नीचे लुढ़क गया। जबकि पिछले साल हाजिर बाजार में चना दिसंबर महीने में 4,500 रुपये प्रति क्विंटल के आसपास कारोबार कर रहा था। बीकानेर मंडी में चने का कारोबार करने वाले के अनुसार इस साल चना किसानों और कारोबारियों के लिए घाटे वाली फसल साबित हुई है। भाड़ा, मंडी कर और दूसरे खर्च काटने के बाद किसान के हाथ में एक क्विंटल चने का दाम 2,500 रुपये भी नहीं आ रहा है। जबकि सरकार ने चने का एमएसपी बढ़ाकर 3,100 रुपये प्रति क्विंटल तय कर दिया है। कारोबारियों की मानी जाए तो इस समय घरेलू बाजार में चने की मांग अच्छी है। ठंड की शुरुआत और शादी-विवाह का सीजन होने के कारण उत्तर भारत सहित देश के सभी हिस्सों में चने की मांग बढ़ी है। इसके बावजूद कीमतों में गिरावट हो रही है।

आयात शुल्क की तैयारी दलहन में गिरावट रोकने के लिए

दिल्ली, आयातित दलहन की ज्यादा सप्लाई से थोक में चना व अरहर एमएसपी से भी सस्ती सुस्ती का आलम 2,800-2,900 प्रति क्विंटल रह गए चना के दाम घटकर 3,000 एमएसपी है रबी सीजन के लिए 3,000 प्रति क्विंटल बिक रहा है मुंबई में ऑस्ट्रेलियाई चना 4,200-4,300 प्रति क्विंटल थोक भाव अरहर का 4,300 प्रति क्विंटल एमएसपी निर्धारित है अरहर का 4,050- 4,150 प्रति क्विंटल आयातित अरहर का भाव मुंबई में घरेलू बाजार में दलहन की थोक कीमतों में आई गिरावट को रोकने के लिए केंद्र सरकार दालों के आयात पर 10 फीसदी आयात शुल्क लगा सकती है। किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए कृषि मंत्रालय दालों के आयात पर शुल्क लगाने का नोट तैयार कर रहा है। उत्पादक मंडियों में चना और अरहर की कीमतें घटकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से भी नीचे आ गई हैंऐसे में किसानों के हितों को देखते हुए मंत्रालय दलहन के आयात पर 10 फीसदी आयात शुल्क लगाने का कैबिनेट नोट तैयार कर रहा है। इस पर अंतिम फैसला आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीईए) को करना है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2013-14 में दलहन पैदावार का लक्ष्य 190 लाख टन का है जबकि वर्ष 2012-13 में देश में 184.5 लाख टन दालों का उत्पादन हुआ था। देश में दालों की सालाना खपत करीब 210-115 लाख टन की होती है

आयात शुल्क वृद्धि से काजू पर मूल्य बढना तय

दिल्ली वियतनाम से आयातित काजू के दाम 350-500 रुपये किलो केंद्र सरकार ने काजू के आयात के लिए आयात शुल्क बढ़ा दिया है। केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीईसी) द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार साबुत काजू के आयात पर शुल्क बढ़ाकर 400 रुपये प्रति किलो और टुकड़ा काजू के आयात पर 288 रुपये प्रति किलो कर दिया है। काजू पर आयात शुल्क बढ? से बाजार में इसके दाम बढ? की संभावना है। काजू के थोक कारोबारी ने बताया कि आयात शुल्क में बढ़ोतरी से घरेलू बाजार में काजू की कीमतों में 100 से 200 रुपये प्रति किलो की तेजी आने की संभावना है। वियतनाम से काजू का बड़ी मात्रा में आयात हो रहा था जबकि आयात शुल्क में की गई बढ़ोतरी से आयात में कमी आयेगी। घरेलू बाजार में साबुत काजू का भाव 500 से 1,000 रुपये प्रति किलो चल रहा है जबकि दो टूकड़ा काजू का भाव 450 से 800 रुपये प्रति किलो चल रहा है। उन्होंने बताया कि वियतनाम से आयातित काजू दिल्ली में 350 से 500 रुपये प्रति किलो की दर से बिक रहा है। उन्होंने बताया कि ब्याह-शादियों के साथ ही सदिर्यों का सीजन होने के कारण काजू में मांग अच्छी बनी हुई है। काजू का देश में भी अच्छा उत्पादन होता है। इसका उत्पादन मुख्य रूप से कर्नाटक और गोवा में होता है। देश में काजू की नई फसल की आवक मार्च-अप्रैल में शुरू होने की संभावना है

FAI सेमिनार मे राज बोरेक्स

दिल्ली सेमिनार मे राज बोरेक्स ने भी भाग लिया राज बोरेक्स के बिजेन्द्र शर्मा ने सृष्टिएग्रो व संवादाता को सेमिनार मे मिल रही प्रतिक्रिया के बारे मे बताया

गेहूँ के प्रमुख रोग तथा उनका नियंत्रण

डा. एल.पी.अवस्थी
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान विभाग, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद (उ0प्र0)

समस्त खाद्यान्नों में गेहूँ का प्रमुख स्थान है। इस फसल को अनेक रोग व कीट हानि पहुंचाते है और कई तो अतीत में फसल के लिए अत्यन्त घातक रहे है। गेहूँ की फसल कई प्रकार के हानिकारक रोगों द्वारा प्रभावित होती है। उन्नत बौनी किस्मों के निवेश के कारण जहॉ अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ है, वहीं रोग व्याधियों को भी अनुकूल वातावरण मिला है। इस कारण वर्तमान में गेहूँ उत्पादकों को इन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। इन व्याधियों के कारण जितनी अधिक उपज में गिरावट होती है, उतना ही इनके नियंत्रण की ओर ध्यान देना आवश्यक हो गया है। अगर इसका समय रहते नियंत्रण न किया गया तो अत्यधिक हानि का समाना करना पड़ सकता है। अतः गेहूँ के प्रमुख रोगों की पहचान कर उनका समय पर उपचार करें।

गेहूँ का पत्तियों का झुलसा रोग

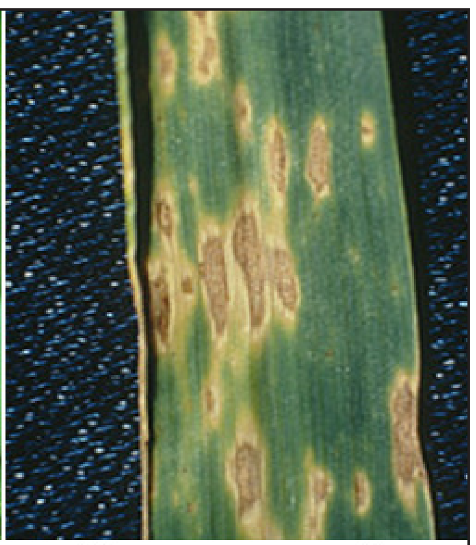

गेहूँ का स्पाट ब्लाच रोग

1. गेरूई या रतुआ रोग (रस्ट) :
गेरूई भूरे, पीले अथवा काले रंग की होती है। फफूँदी के फफोले पत्तियों पर पड़ जाते है जो बाद में बिखर कर अन्य पत्तियों को रोगी कर देते है। काली गेरूई तना तथा पत्ती दोनों पर लगती है।

अ. काली गेरुइ :
रोग कारक– पक्सीनिया ग्रैमिनिस फा. स्पे. ट्रिटिसाई।

लक्षण–
यह गेरुई मुख्य रूप से तनों पर आक्रमण करती हैं। इसके अतिरिक्त पत्तियों या पर्णच्छेदों पर भूरे स्पोर बनाती है। यह स्पोर या यूरीडियम लम्बाई में 5 से 7 मिलीमीटर या इससे अधिक होते हैं और प्रायः एक दूसरे से मिले रहते हैं। यह जल्दी ही फट जाते हैं जिससे एक भूरा चूर्ण निकलता हैं। फसल पकते समय टीलियम बनते हैं। इनका रंग यूरीडियमों के रंग से बहुत गाढ़ा होता है और बाद में गहरा काला हो जाता हैं। टिलियम भी यूरीडियमों की तरह फटते हैं, जिससे असंख्य टेल्यूटो बीजाणु निकलते हैं।

ब. पीली गेरुई :
रोग कारक– पक्सीनिया स्ट्राइफार्मिस।

लक्षण–
पत्तियों पर छोटे छोटे अण्डाकार हल्के पीले रंग के यूरीडियम पंक्तियों में पाये जाते हैं। रोग की व्यापक दशा में पूर्णच्छर वाह्म पुष्प कवच, दानों या तनों पर भी स्पोर दिखाई देते हैं। यूरीडियम के फटने पर चमकीले पीले यूरेडो बीजाणु बाहर आ जाते हैं। बाद की अवस्था में मुख्यतः पत्तियों की निचली सतह तथा पर्णच्छिदों पर चमकीले, हल्के रंग के टीलेटियम बनते है। इसके टीलिएम फटते नहीं है।

गेहूँ का पीली गेरुई रोग

स. भूरी गेरुई :
रोग कारक– पक्सीनिया रिकोन्डिटा।

लक्षण–
सामान्यतया यूरोडियम पत्तियों पर ही पाये जातें है, परन्तु कभी कभी पर्णच्छिदों या तनों पर भी देखें जाते हैं। पौधे के परिपक्व अवस्था के निकट पहुँचने तक यूरीडियम पर्णध्वज पर सर्वाधिक पाये जाते हैं। इसके स्पोर छोटे, गोल, चमकीले नारंगी रंग के तथा पत्तियों की सतह पर बिखरे पाये जाते हैं, जिनसे असंख्य यूरेडो बीजाणु बाहर निकलते हैं।

नियंत्रण –
रोग रोधी प्रजाति का चयन करके बुवाई करें। गेहूँ की फसल में गेरूई नियत्रंण के लिये आम तौर पर आर्थिक कारणों से कवक नाषी के छिड़काव की संस्तुति नही की जाती है। केवल विषेश अवस्था में जब रोग प्रकोप होने की प्रबल सम्भावना होती है, तभी कवकनाषी जैसे कि मैंकोजेब 75 प्रतिशत घु. चू. के 2 किग्रा. या जिनेब 75 प्रतिशत घु. चू. के 2.5 किग्रा. का छिड़काव करना चाहिए। प्रोपीकोनैजॉल 25 ई. सी. के 500 मिली को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से पत्तियों पर प्रथम बार लक्षण दिखते ही छिड़ककर नियंत्रित किये जा सकते हैं।

2.पत्तियों का झुलसा रोगः
रोग कारक– बाईपोलरिस सोरोकिनियाना और अल्टरनेरिया ट्रिटिसिना

लक्षण–
यह रोग प्रायः भारत के सभी जगहो पर जहॉ गेहूँ की बुआई होती है पाया जाती है। निचली पत्तियों पर कुछ पीले व कुछ भूरापन लिये हुए अण्डाकार धब्बे बनते है तथा पीले से भूरे रंग की चित्तियॉ भी बनती हैं। ये धब्बे बाद में किनारो पर कत्थई भूरे रंग के तथा बीच में हल्के भूरे रंग के हो जाते है। स्वतंत्र रुप से बनने वाले ये धब्बे बाद में लम्बाई तथा चौड़ाई में बढ़कर आपस में मिल भी सकते हैं ऐसी स्थिति में प्रायः पूरी पत्ती झुलस जाती हैं।

गेहूँ का पत्तियों का झुलसा रोग गेहूँ का स्पाट ब्लाच रोग

नियंत्रण–
सावधानी के रुप में प्रमाणित बीज होने पर थीरम 75 प्रतिशत शुष्क चूर्ण के 2.5 ग्राम से प्रति किग्रा. की दर से बीज का शोधन करें। कवकनाशी जैसे कि मैंकोजेब 75 प्रतिशत घु. चू. के 2 किग्रा. या जिनेब 75 प्रतिशत घु. चू. के 2.5 किग्रा. या प्रोपीकोनैजॉल 25 ई. सी. के 500 मिली को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से पत्तियों पर प्रथम बार लक्षण दिखते ही छिड़ककर नियंत्रित किये जा सकते हैं। प्रथम दो फफूँदीनाशको का दूसरा छिड़काव आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तर पर किया ता सकता हैं।

3. करनाल बन्टः
रोग कारक– निवोस्सिया इंडिका

लक्षण–
यह रोग दाने बन जाने के बाद दिखता हैं। किसी विशेष बाली के कुछ दाने अंशतः काले चूर्ण का रुप धारण कर लेते हैं। चूर्ण शुरु में दाने की फलभिति से ढका रहता हैं। बालियॉ पकते समय बाहरी चूर्ण फैल जाता हैं। इससे दाने नंगे हो जाते हैं और कभी कभी जमीन पर भी गिर जाते हैं। बाद में फल झिल्ली के फटने से काला चूर्ण वातावरण में फैल जाता हैं। इस स्थिति में ट्राइमिथाइल एमाइन के कारण सड़ी मछली के समान दुर्गन्ध आती हैं।

गेहूँ का करनाल बन्ट रोग नियंत्रण–
प्रमाणित बीज बोयें तथा बीज शोधन करें। रोग प्रभावित खेतों में गेहूँ को किसी अन्य फसल से चकित करें। रोग की संभावना होने पर प्रोपीकोनाजॉल 25 ई. सीं. के 500 मि.ली. को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से बाली निकलते ही छिड़काव करें।

4. अनावष्त कण्डुआः
रोग कारक– युस्टिलागो सेगेटम ट्रिटिसाई।

लक्षण–
रोगी पौधों में बालियॉ प्रायः स्वस्थ पौधों की अपेक्षा जल्दी निकलती है। ऐसे पौधों की सभी बालियॉ पकने पर काले चूर्ण का रुप ले लेती हैं और उसमें दाने शेष नहीं बचते हैं। यह काला चूर्ण एक नरम चॉदी सदष्य सफेद झिल्ली से ढका रहता हैं। यह झिल्ली बालियों के बाहर निकलते ही फट जाती हैं जिससे काला जैतूनी चूर्ण खुलकर वातावरण में बिखरने लगता हैं। अन्त में बालियों के स्थान पर केवल प्राक्ष या रेचिस ही शेष बचता हैं। कभी कभी एकाध बालियॉ केवल आंशिक रुप से काले चूर्ण में बदलती हैं।

गेहूँ का अनावष्त कण्डुआ नियंत्रण–
प्रमाणित बीज तथा रोग रोधी प्रजाति का चयन करके बुवाई करें। अन्य बीज का कार्बोक्सिन 75 प्रतिशत घु. चू. या कार्बेन्डेजिम 50 प्रतिशत घु. चू. के 2.5 ग्राम के प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन करें। रोगी पौधो को उखाड़ कर नष्ट कर दें।

5. आवष्त्त कण्डुआः
रोग कारक– निवोस्सिया हारडाई

लक्षण–
बालियों में दानों के स्थान पर फॅफूदी के काले बीजाणु बन जाते है। यह बीजाणु एक मजबूत झिल्ली से ढके रहते है; मड़ाई के समय बीजाणु फूट कर स्वस्थ बीजों से चिपक जाते है ।

नियंत्रण–
प्रमाणित बीज बोयें तथा बीज शोधन करें। अन्य बीज का कार्बोक्सिन 75 प्रतिषत घु. चू. या कार्बेन्डेजिम 50 प्रतिषत घु. चू. के 2.5 ग्राम के प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन करें। रोगी पौधो को उखाड़ कर नश्ट कर दें।

एकीकृष रोग नियंत्रण–
मष्दा उपचार :
बुवाई से पूर्व जैव कवकनाशी (ट्राईकोडरमा प्रजाति आधारित) के द्वारा 4.0 ग्राम प्रति किलोग्राम प्रति हेक्टेयर को 60 किलो गोबर की खाद में मिलाकर मष्दा उपचार करें। जिससे अनावष्त कण्डुआ, करनाल बंट आदि रोगों के प्रबन्धन में सहायता मिलती है।

बीज उपचार :
जैव कवकनाशी (ट्राईकोडरमा प्रजाति आधारित) के द्वारा 4.0 ग्राम प्रति किलोग्राम या कार्बोक्सिन (2 ग्राम/किग्रा.) की दर से बीजोपचार करना चाहिए जिससे बीज जनित रोगों (अनावष्त कण्डुआ, करनाल बंट आदि) की रोकथाम हो जायेगी। यदि मष्दा उपचार जैव कवकनाशी से नही किया हो तो कार्बोक्सिन का प्रयोग संस्तुत दर पर किया जा सकता है। अनावष्त कण्डुवा से ग्रसित पौधों को उखाड़ कर मिट्टी मे दबा दें।

पर्णीय उपचार :
1.रतुआ (पीला, भूरा, काला), झुलसा रोग तथा करनाल बन्ट के प्रबन्धन हेतु, मैकोजेब का 2 छिड़काव 2.0 से 2.5 ग्राम/लीटर की दर सें या प्रोपीकोनैजॉल 25 ई. सी. के 500 मिली को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर सें प्रयोग करना चाहिए।

2.चूर्णिल आसिता रोग के लिए गंधक चूर्ण कवकनाशी का प्रयोग 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से करना चाहिए। रोग की पहचान होते ही दवा का प्रयोग लाभदायक होता है।

3.करनाल बन्ट तथा स्पाट ब्लाच रोग के लिए प्रोपीकोनाजोल का 0.5 मिली./लीटर पानी की दर पर्णिय छिड़काव पुष्पन की अवस्था से पहले करना लाभदायक रहता है।

टमाटर की उन्नत उत्पादन तकनीक

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृशि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

टमाटर हमारे देश में खेती हेतु प्रमुख सब्जी फसल है, इसकी खेती आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है। टमाटर में विटामिन–ए, विटामिन–सी, पोटेशियम,कैल्शियम लोह तथा अन्य खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसमे एन्टीऑक्सीडेन्ट, लाइकोपिन

आदि भी पाये जाते हैं। इसके फलों का गूदा तथा रस सुपाच्य, पित्तनाशक, कृमिनाशक क्षुधा वर्धक तथा रक्त साफ करने वाला होता है। टमाटर के फलों को ताजा खाने के अलावा सब्जी, अचार, प्यूरी, सलाद, सूप, सॉस, कैचप, चटनी आदि के रूप में उपयोग किया जाता है।

जलवायू– टमाटर गर्म मौसम की फसल है तथा यह फसल पाला सहन नही कर सकती है। इसकी खेती हेतु उपयुक्त तापमान 18 से 27 डिग्री सेंटीग्रेड है, तथा तापमान 38 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक होने पर अपरिपक्व फल एवं फूल गिर जाते हैं।

भूमि– टमाटर की खेती के लिए जल निकास वाली तथा पोशक तत्व युक्त दोमट या बलुई दोमट उपयुक्त रहती है।

उपयुक्त किस्में–
उन्नत किस्में– पूसा रूबी, पूसा–120, पूसा अर्का सौरभ, अर्का अनन्या, अर्का आभा, अमश्त।
संकर किस्में– पूसा हाइब्रिड–1, पूसा हाइब्रिड–2, पूसा हाइब्रिड–4, पूसा हाइब्रिड–8, अविनाश –2,, सोनाली रश्मि
इन किस्मों के अतिरिक्त कई अच्छी बीज उत्पादक कम्पनियों ने भी क्षेत्र के अनुसार अपनी किस्में विकसित की हैं। किसान कम्पनी की गुणवत्ता के अनुसार बीज खरीद सकता है।

बीज की मात्रा–
उन्नत किस्म हेतु– 350–400 ग्राम बीज प्रति हैक्टेयर तथा संकर किस्मों हेतु 150–200 ग्राम बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त है।

बुवाई का समयः–

मौसम	नर्सरी बुवाई	रोपाई का समय
सर्द मौसम	जुलाई–सितम्बर	अगस्त–अक्टूबर
बसन्त ग्रीश्म	नवम्बर–दिसम्बर	दिसम्बर–जनवरी

नर्सरी तैयार करनाः– नर्सरी क्यारी एक मीटर चौड़ी, 5 मीटर लम्बी तथा 15 सेमी ऊंची क्यारियाँ बनाई जानी चाहिए। क्यारियाँ बनाने से पहले मिट्टी को भुरभुरी बनाकर गोबर की सड़ी खाद 10–15 किग्रा तथा मिट्टी उपचार हेतु 100 ग्राम फोरेट मिलायें। बीजो को कार्बन्डाजिम 3 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित कर बीजों को 5 सेमी की दूरी पर लाईनों में लगायें। बीज बोने के बाद क्यारी को पुआल या सरकंडा आदि की पलवार से ढंक देते हैं। इससे नमी संरक्षित रहती है, तथा अंकुरण जल्दी हो जाता है। अंकुरण के बाद पलवार हटा देते हैं। कीट व्याधि से पौधों को बचाने हेतु इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली./3 लीटर पानी तथा 2 ग्राम मैन्कोजेब या कार्बन्डाजिम प्रति लीटर पानी मे घोल कर छिड़काव करें।

नर्सरी में 40 मैष नेट का उपयोगः– पत्ती मोड़क (लीफ कर्ल) वायरस से पौधों को बचाने हेतु बीज बुवाई के पश्चात क्यारी को 40 मैश की जालीदार नाइलोन नेट से ढंक देते हैं इसके लिए क्यारी के चारो तरफ एक फुट ऊंची लकड़ी गाड़ कर नेट लगा देते हैं।

खेत की तैयारीः– मिट्टी की जुताई तथा पाटा लगाकर भुरभुरी व ढेले रहित बना लेनी चाहिए। खेत की तैयारी के समय उपयुक्त मात्रा में गोबर की सड़ी खाद तथा उर्वरक मिश्रण मिलायें।

खाद एवं उर्वरकः– खाद एवं उर्वरक की मात्रा का निर्धारण मिट्टी परीक्षण के द्वारा किया जा सकता है। टमाटर की फसल हेतु निम्न खाद एवं उर्वरकों की रहती है।

	खाद एवं उर्वरक	उन्नत किस्म हेतु (प्रति हैक्ट.)	संकर किस्म हेतु (प्रति हैक्ट.)
1.	गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट	20–25 टन	25–35 टन
2.	नत्रजन	120 किग्रा	150 किग्रा
3.	स्फुर	60 किग्रा	80 किग्रा
4.	पोटाष	50 किग्रा	60 किग्रा

गोबर की खाद, फॉस्फोरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा रोपाई से पहले खेत में दें तथा नत्रजन की षेश मात्रा 30 दिन वाद व 50 दिन वाद दो भागों में दें। सूक्ष्म पोशक तत्वों में बोरोन व जिंक की कमी पाये जाने पर इनका उपयोग करें। जिंक हेतु जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हैक्टेयर का उपयोग करें।

पौध रोपणः– साधारणतया टमाटर में पौध रोपण की दूरी लाईन से लाईन 60–75 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 45–60 से.मी. रखते हैं। पौधे लगाने हेतु समतल क्यारी या रेज्ड बैड विधि का प्रयोग किया जा सकता है। पौधों को नर्सरी से निकालने के बाद इनकी जड़ों को कार्बन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर पानी के घोल में 10 मिनट डुबोकर पौध रोपण करें। यथासम्भव पौध रोपण का कार्य षाम के समय करे तथा रोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें।

सिंचाईः– भूमि एवं मौसम की स्थिति को देखते हुए आवष्यकतानुसार 6–10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

निंदाई–गुड़ाईः– पौध लगाने के 20–25 दिन बाद प्रथम निंदाई–गुड़ाई करें तथा उसके बाद 2–3 वार निंदाई–गुड़ाई तानुसार करके खेत को खरपतवार रहित रखें।

पौधो का सहारा देनाः– टमाटर की लम्बी बढ़ने वाली किस्मों को विषेश रूप से सहारा देने की आवष्यकता होती है। पौधो का सहारा देने से फल मिट्टी एवं पानी के सम्पर्क में नही आ पाते जिससे फल सड़ने की समस्या नही होती है। सहारा देने के लिए तार एव बांस की लकड़ी या अन्य लकड़ी का उपयोग किया जा सकता है। पौधों की कतारों के दोनो तरफ लकड़ी को जमीन में गाड़कर इस पर तार या सुतली बांधकर पौधों को बांधा जाता है। दूसरी विधि में एक मीटर लम्बी लकड़ी को पौधों के पास जमीन में गाड़कर पौधों को तीन–चार जगह पर सुतली से बांध देते हैं।

फलों की तुड़ाईः– फलों की तुड़ाई इनके उपयोग पर निर्भर करती है, यदि टमाटर को नजदीक के बाजार में बेचना हो तो फल पकने के बाद तुड़ाई करनी चाहिए। तथा यदि फलों को दूर बाजार में भेजना हो तो जैसे ही उनके रंग में परिवर्तन होना प्रारंभ हो तो तुड़ाई प्रारम्भ करनी चाहिए।

उपजः– टमाटर की औसत उपज 300–500 क्विंटल/हैक्टेयर होती है। तथा संकर टमाटर की उपज 600–800 क्विंटल/हैक्टेयर तक हो सकती है।

पौध संरक्षण

अ) कीट नियंत्रण–

1. सफेद मक्खी– ये कीट वाइरस जनित रोग लीफ कर्ल या पत्ती मोड़क बीमारी फैलाता है। इस कीट के एवं वयस्क दोनो ही पत्तों से रस चूसते हैं। इनके द्वारा बनाये गये मधु पर काली फफूंद आ जाती है। जिससे पौधों में संश्लेषण कम हो जाता है।

प्रबंधन–
नर्सरी को 40 मैश नाइलोन नेट से ढंक कर रखें। रोपाई से पहले पौधों की जड़ों को आधे घण्टे के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली/3 लीटर पानी के घोल में डुबोकर रखें।
नीम बीज अर्क (4 प्रतिषत) या डाइमिथोएट 30 ई.सी. 2 मिली/लीटर या मिथाइल डेमेटोन 30 ई.सी. 2 मिली/लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

2फल छेदक कीट– इस कीट की इल्लियां पत्तों को खाकर नुकसान करती हैं। एवं उसके बाद फलों में छेद करके गूदे का खाना प्रारम्भ कर देती हैं तथा फल को खोखला बना देती हैं।

प्रबंधन–

अ टमाटर की प्रत्येक 16 लाईनों के बाद 1 लाईन गेंदा की लगायें।
अ इल्लियों वाले फलों को तोड़कर नश्ट कर दें।
अ कीट की निगरानी के लिए 5 फैरोमेन ट्रैप प्रति हैक्टेयर लगायें।
अ प्रकोप होने पर नीम बीज अर्क या एन.पी.व्ही. 250 एल. ई. प्रति हैक्टेयर या बी.टी. 1 ग्राम/लीटर पानी या इमामैक्टीनबैंजोएट 5 एस.जी. 1 ग्राम/2 लीटर या स्पिनोसेड 45 एस.सी. 1 मिली/4 लीटर या डेल्टामैथ्रिन 2.5 ई.सी. 1 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3.तम्बाकू की इल्ली– इस कीट की इल्लियां नई कोपलों एवं पत्तो को खाकर नुकसान पहुंचाती हैं जिससे पौधों की वर्षद्धि रूक जाती है।

प्रबंधन–
अ कीट की निगरानी के लिए 5 फैरोमेन ट्रैप प्रति हैक्टेयर लगायें।
अ प्रोफेनोफॉस 2 मिली./लीटर या स्पिनोसेड 45 एस.सी. 1 मिली/4 **लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।**

4. पत्ती सुरंगक कीट (लीफ माइनर)– इस कीट के पत्तियों के हरे भाग को खाकर टेड़ी मेड़ी सफेद रंग की सुरंगं बना देते हैं।

प्रबंधन–
अ ग्रसित पत्तियों को नश्ट कर दें।
अ डाइमिथोऐट 2 मिली/लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली/3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

ब) रोग प्रबंधन–

1. डैम्पिंग ऑफ– नर्सरी अवस्था में पौधे के जमीन के पास का भाग काला पड़कर कमजोर हो जाता है, तथा पौधे मरने लगते हैं।

प्रबंधन–
अ बीजोपचार थायरम या कार्बन्डाजिम 3 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से करें।
अ नर्सरी क्यारी उठी हूई बनायें।
अ कार्बन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर नर्सरी क्यारी में ड्रेंचिंग करें।

2. झुलसा (ब्लाइट)– इस रोग के प्रकोप से पौधों की पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। अगेती झुलसा में धब्बों पर गोल–गोल छल्ले नुमा धारियां बन जाती हैं। तथा पिछेती झुलसा में पत्तियों पर जलीय, भूरे रंग के गोल से अनियमित आकार के धब्बे बन जाते हैं, जिनके कारण पत्तियां पूर्ण रूप से झुलस जाती हैं।

प्रबंधन– मैन्कोजैब 2 ग्राम या कॉपरऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3.पर्ण कुंचन या पत्ती मोड़क– इस विशाणु जनित रोग में पौधों की पत्तियां सिकुड़कर मुड़ जाती हैं। सफेद मक्खी व अन्य कीट इस रोग को फैलाने में बाहक का कार्य करते हैं।

प्रबंधन–
अ .नर्सरी मिट्टी का उपचार कार्बोफ्यूरॉन 3 जी. 8–10 ग्राम/वर्गमीटर से करें।
अ.40 मैष नाईलोन नेट से नर्सरी क्यारी को ढंकें।
अ.पौध रोपण के 15–20 दिन बाद डाइमिथोऐट 30 ई.सी. या इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली/3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

आपका पशु बीमार तो नहीं

खेती और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी व्यवसाय हैं। मध्यप्रदेश में खेती के साथ-साथ गाय, भैंस आदि मुख्य रूप से दूध उत्पादन व कृषि संबंधी कार्यों के लिए पाले जाते हैं। दूध के लिए पाले जाने वाले पशुओं को प्रति पशु प्रति ब्यात दूध उत्पादन और कृषि संबंधी कार्यों के लिए पाले जाने वाले पशुओं की कार्य क्षमता दोनों ही हमारे प्रदेश में कम है। इनके कम होने के प्रमुख कारण हैं- उन्नत नस्ल के पशु न होना, असंतुलित और अपर्याप्त पोषण, सही रख-रखाव न प्रबंधन न होना तथा पशु रोगों के प्रति सतर्कता न बरतना आदि। इनमें से भी सबसे ज्यादा नुकसान पशु रोगों से होता है, जो दूध का उत्पादन और काम करने की क्षमता घटा देते हैं। यूँ तो पशुओं में कई तरह के अलग-अलग रोग पाए जाते हैं, जिनका इलाज पशु चिकित्सकों (डॉक्टरों) द्वारा किया जाता है। हर रोग के अलग-अलग लक्षण व अलग-अलग कारण होते हैं जिन्हें पहचानने के लिए विशेषज्ञों की सहायता की आवश्यकता होती है। परंतु रोग कोई भी हो, कुछ सामान्य लक्षण सब लोगों में समान होते हैं। इन लक्षणों से कम से कम इतना तय किया जा सकता है कि आपका पशु रोगग्रस्त है या नहीं। रोगी पशु उदास दिखाई पड़ता है। उसके कान सीधे खड़े होने के बजाए ढीले होकर लटक जाते हैं। उसकी गर्दन भी तनी हुई न होकर ढीली और लटकी हुई दिखती है। वह अपनी चंचलता और सतर्कता खोकर अन्य पशुओं के झुंड से अलग-थलग रह कर उनके पीछे धीरे-धीरे चलता है या बैठ जाता है। उसके बालों की चमक कम होकर, बाल कुछ खड़े और अस्त-व्यस्त से दिख पड़ते हैं। आँखों की पुतलियों की हलचल धीमी व चमक कम हो जाती है।

वह खाली बैठने पर जुगाली धीमे-धीमे कम गति से करता है या बंद कर देता है। दूध देने वाले पशुओं का दूध कम हो जाता है। काम या श्रम करने वाले पशु जैसे बैल या भैंसा आदि खेत में हल-बखर, पाटा आदि चलाते समय या गाड़ी में जुते होते पर जल्दी से हाँफने लगते हैं। कभी-कभी काम करना बंद कर देते हैं या थककर बैठ जाते हैं। गोबर बहुत पतला या सख्त (कड़ा) हो जाता है। गोबर व मूत्र अधिक बदबूदार हो जाता है। शरीर का तापक्रम व गाड़ी तथा साँस लेने की गति बढ़ जाती है।

हर किस्म के पशु की नाड़ी की गति, श्वास प्रश्वास की गति और शरीर का तापमान सुनिश्चित व अलग-अलग होता है। इससे कम या अधिक होना पशु के रोगी होने का संकेत होता है। नाड़ी की गति गाय प्रजाति के पशुओं में पूँछ की जड़ के पास अँगूठे व दो-तीन उँगलियों से हल्का-सा दबाकर मालूम की जा सकती है। नाड़ी की सही गति गाय व बैल में 50 से 70, भैंस में 55 से 70, बकरी व भेड़ में 70 से 80 और कुत्तों में 70 से 120 प्रति मिनट होती है। नाड़ी की गति सामान्यतः नर की अपेक्षा मादा में और अधिक आयु के पशु की अपेक्षा कम उम्र के पशु में अधिक होती है।

पशुओं में दौड़ने-भागने, अधिक वजन खींचने के बाद और मौसम परिवर्तन के कारण भी बढ़ जाती है। इसलिए जब भी नाड़ी की गति मालूम करना हो पशु को विश्राम की सामान्य स्थिति में आने के बाद ही लेना चाहिए। नाड़ी की सही गति ज्ञात करने के लिए ऐसी घड़ी लें, जिसमें सेकंड का काटा लगा हो। नाड़ी की गति एक-एक मिनट तक तीन बार लेकर उसका औसत निकाल लें। ऐसे निकालें श्वास की गति : उदाहरण के लिए एक-एक मिनट तक अलग-अलग तीन बार गिनने पर गाय की नाड़ी की गति आई- 64, 60 और 62~ अब इसका जोड़ हुआ 186 और तीन से भाग देने पर औसत हुआ 62 प्रति मिनट। यह हुई नाड़ी की सही गति। नाड़ी की गति के समान ही श्यास प्रश्वास की सही गति से स्वास्थ्य का अनुमान लगाया जाता है। गाय के शरीर भार के अनुसार 12 से 20, भैस के शरीर भार के अनुसार 16 से 20, भेड़, बकरी की 12 से 22 प्रति मिनट होती है।

श्वास प्रश्वास की गति भी श्रम के बाद, गर्भावस्था में, सोते समय, जुगाली करते समय, भागने-दौड़ने के बाद और गर्मी के मौसम में अधिक हो जाती है। श्वास की गति पशुओं के कुछ देर विश्राम करने के बाद, सामान्य होने पर ही ली जानी चाहिए। इनकी गिनती भी तीन बार औसत निकालकर ही ली जानी चाहिए। श्वास की गति पशुओं के पेट पर हाथ रखकर या नाक (नथुनों) के सामने हाथ रखकर सावधानी पूर्वक गिनकर मालूम की जा सकती है। किसी भी प्रकार की असामान्यता होने पर पशु चिकित्सक की सलाह लें। अस्त-व्यस्त से दिख पड़ते हैं। आँखों की पुतलियों की हलचल धीमी व चमक कम हो जाती है।

वह खाली बैठने पर जुगाली धीमे-धीमे कम गति से करता है या बंद कर देता है। दूध देने वाले पशुओं का दूध कम हो जाता है। काम या श्रम करने वाले पशु जैसे बैल या भैंसा आदि खेत में हल-बखर, पाटा

आदि चलाते समय या गाड़ी में जुते होते पर जल्दी से हाँफने लगते हैं। कभी-कभी काम करना बंद कर देते हैं या थककर बैठ जाते हैं। गोबर बहुत पतला या सख्त (कड़ा) हो जाता है। गोबर व मूत्र अधिक बदबूदार हो जाता है। शरीर का तापक्रम व गाड़ी तथा साँस लेने की गति बढ़ जाती है। हर किस्म के पशु की नाड़ी की गति, श्वास प्रश्वास की गति और शरीर का तापमान सुनिश्चित व अलग-अलग होता है। इससे कम या अधिक होना पशु के रोगी होने का संकेत होता है। नाड़ी की गति गाय प्रजाति के पशुओं में पूँछ की जड़ के पास अँगूठे व दो-तीन उँगलियों से हल्का-सा दबाकर मालूम की जा सकती है। नाड़ी की सही गति गाय व बैल में 50 से 70, भैंस में 55 से 70, बकरी व भेड़ में 70 से 80 और कुत्तों में 70 से 120 प्रति मिनट होती है। नाड़ी की गति सामान्यतः नर की अपेक्षा मादा में और अधिक आयु के पशु की अपेक्षा कम उम्र के पशु में अधिक होती है। पशुओं में दौड़ने-भागने, अधिक वजन खींचने के बाद और मौसम परिवर्तन के कारण भी बढ़ जाती है। इसलिए जब भी नाड़ी की गति मालूम करना हो पशु को विश्राम की सामान्य स्थिति में आने के बाद ही लेना चाहिए। नाड़ी की सही गति ज्ञात करने के लिए

खेती और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी व्यवसाय हैं। मध्यप्रदेश में खेती के साथ-साथ गाय, भैंस आदि मुख्य रूप से दूध उत्पादन व कृषि संबंधी कार्यों के लिए पाले जाते हैं। दूध के लिए पाले जाने वाले पशुओं को प्रति पशु प्रति ब्यात दूध उत्पादन और कृषि संबंधी कार्यों के लिए पाले जाने वाले पशुओं की कार्य क्षमता दोनों ही हमारे प्रदेश में कम है। इनके कम होने के प्रमुख कारण हैं- उन्नत नस्ल के पशु न होना, असंतुलित और अपर्याप्त पोषण, सही रख-रखाव न प्रबंधन न होना तथा पशु रोगों के प्रति सतर्कता न बरतना आदि। इनमें से भी सबसे ज्यादा नुकसान पशु रोगों से होता है, जो दूध का उत्पादन और काम करने की क्षमता घटा देते हैं। यूँ तो पशुओं में कई तरह के अलग-अलग रोग पाए जाते हैं, जिनका इलाज पशु चिकित्सकों (डॉक्टरों) द्वारा किया जाता है। हर रोग के अलग-अलग लक्षण व अलग-अलग कारण होते हैं जिन्हें पहचानने के लिए विशेषज्ञों की सहायता की आवश्यकता होती है। परंतु रोग कोई भी हो, कुछ सामान्य लक्षण सब लोगों में समान होते हैं। इन लक्षणों से कम से कम इतना तय किया जा सकता है कि आपका पशु रोगग्रस्त है या नहीं। वह खाली बैठने पर जुगाली धीमे-धीमे कम गति से करता है या बंद कर देता है। दूध देने वाले पशुओं का दूध कम हो जाता है। काम या श्रम करने वाले पशु जैसे बैल या भैंसा आदि खेत में हल-बखर, पाटा आदि चलाते समय या गाड़ी में जुते होते पर जल्दी से हाँफने लगते हैं। कभी-कभी काम करना बंद कर देते हैं या थककर बैठ जाते हैं। गोबर बहुत पतला या सख्त (कड़ा) हो जाता है। गोबर व मूत्र अधिक बदबूदार हो जाता है। शरीर का तापक्रम व गाड़ी तथा साँस लेने की गति बढ़ जाती है।

रोगी पशु उदास दिखाई पड़ता है। उसके कान सीधे खड़े होने के बजाए ढीले होकर लटक जाते हैं। उसकी गर्दन भी तनी हुई न होकर ढीली और लटकी हुई दिखती है। वह अपनी चंचलता और सतर्कता खोकर अन्य पशुओं के झुंड से अलग-थलग रह कर उनके पीछे धीरे-धीरे चलता है या बैठ जाता है। उसके बालों की चमक कम होकर, बाल कुछ खड़े और अस्त-व्यस्त से दिख पड़ते हैं। आँखों की पुतलियों की हलचल धीमी व चमक कम हो जाती है। हर किस्म के पशु की नाड़ी की गति, श्वास प्रश्वास की गति और शरीर का तापमान सुनिश्चित व अलग-अलग होता है। इससे कम या अधिक होना पशु के रोगी होने का संकेत होता है। नाड़ी की गति गाय प्रजाति के पशुओं में पूँछ की जड़ के पास अँगूठे व दो-तीन उँगलियों से हल्का-सा दबाकर मालूम की जा सकती है। नाड़ी की सही गति गाय व बैल में 50 से 70, भैंस में 55 से 70, बकरी व भेड़ में 70 से 80 और कुत्तों में 70 से 120 प्रति मिनट होती है। नाड़ी की गति सामान्यतः नर की अपेक्षा मादा में और अधिक आयु के पशु की अपेक्षा कम उम्र के पशु में अधिक होती है। पशुओं में दौड़ने-भागने, अधिक वजन खींचने के बाद और मौसम परिवर्तन के कारण भी बढ़ जाती है। इसलिए जब भी नाड़ी की गति मालूम करना हो पशु को विश्राम की सामान्य स्थिति में आने के बाद ही लेना चाहिए। नाड़ी की सही गति ज्ञात करने के लिए ऐसी घड़ी लें, जिसमें सेकंड का काटा लगा हो। नाड़ी की गति एक-एक मिनट तक तीन बार लेकर उसका औसत निकाल लें। ऐसे निकालें श्वास की गति : उदाहरण के लिए एक-एक मिनट तक अलग-अलग तीन बार गिनने पर गाय की नाड़ी की गति आई- 64, 60 और 62अब इसका जोड़ हुआ 186 और तीन से भाग देने पर औसत हुआ 62 प्रति मिनट। यह हुई नाड़ी की सही गति। नाड़ी की गति के समान ही श्यास प्रश्वास की सही गति से स्वास्थ्य का अनुमान लगाया जाता है। गाय के शरीर भार के अनुसार 12 से 20, भैस के शरीर भार के अनुसार 16 से 20, भेड़, बकरी की 12 से 22 प्रति मिनट होती है। श्वास प्रश्वास की गति भी श्रम के बाद, गर्भावस्था में, सोते समय, जुगाली करते समय, भागने-दौड़ने के बाद और गर्मी के मौसम में अधिक हो जाती है। श्वास की गति पशुओं के कुछ देर विश्राम करने के बाद, सामान्य होने पर ही ली जानी चाहिए। इनकी गिनती भी तीन बार औसत निकालकर ही ली जानी चाहिए। श्वास की गति पशुओं के पेट पर हाथ रखकर या नाक (नथुनों) के सामने हाथ रखकर सावधानी पूर्वक गिनकर मालूम की जा सकती है। किसी भी प्रकार की असामान्यता होने पर पशु चिकित्सक की सलाह लें।

हरियाणा के लोगों ने गौ वध छोड़ा

हरियाणा के मेवात जिले के   एक मुसलिम बहुल पिछड़े गांव

खेरी कलां में लोगों ने गोशाला प्रतिष्ठान को अपनी आजीविका का जरिया बनाया है. पहले यह गांव गौ वध के लिए जाना जाता था. लेकिन अब यहां गायों का पालन उसके दूध, दूध से बने पदार्थ, गोबर आदि के लिए किया जाता है. इससे पूरे गांव की ही तसवीर बदल गयी है. सोहना-अलवर रोड़ पर दिल्ली से 80 किमी दूर एक गांव है खेरी कलां. यह हरियाणा के सर्वाधिक पिछड़े जिले मेवात में आता है. मुसलिम महिलाओं के बीच साक्षरता दर महज 7.1 प्रतिशत ही है. गांव में 370 घर है.

इनमें 152 परिवार गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) आते हैं. 95 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि पर निर्भर हैं. कुछ समय पहले इस गांव के अधिकांश लोग बेहतर आय के लिए गौ वध के काम से जुड़े थे. वे बीफ बेचकर अपनी आजीविका चलाते थे. पर गांव के ही एक युवक मोहम्मद हसीन खान और ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट नामक एक एनजीओ के प्रयास से गोशाला प्रतिष्ठान का निर्माण हुआ और आज गांव में गाय के दूध, दूध से बने पदार्थ, गोबर आदि के लिए बड़े स्तर पर गायों को पाला जा रहा है.

महंगा हुआ ऊन का बाजार भेड़ों की तादाद घटी

भेड़ के ऊन के बने कंबल पर बैठकर चंद स्थानों पर ही पुरोहित धार्मिक कार्यक्रम संपन्न कराते दिखते है। अब प्राकृतिक ऊनी परिधान खास वर्ग का ही पहनावा होगा। हरेक के बूते की बात नहीं होगी भेड़ के परिष्कृत ऊन से बने वस्त्रों की खरीददारी। हाल के वर्षो में आया उछाल आगे भी जारी रहेगा। अब किसान के खाली पड़े खेतों में उसके अनुनय पर भेडें़ नहीं रुकती है। इन सबका एक कारण है समूचे प्रदेश में भेड़ों की जनसंख्या में जबरदस्त गिरावट।

बदलते वक्त ने इंसान की सोच को बदला। अब बाग-बगीचों का क्षेत्रफल सिकुड़ता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बंजर के रूप में छोड़े गये चरागाहों का वजूद ही मिट गया है। जाहिर है कि महज घास के सहारे पेट भरने वाले पशुओं का पालन ऐसे में एक समस्या हो गयी है। भेड़ भी इसी प्रजाति का जानवर है जिसे बांधकर चारा, भूसा या दाना नहीं खिलाया जा सकता। इसे महज घास खिलायी/ चराई जाती है। समूचे प्रदेश में भेड़ों की संख्या में जबरदस्त कमी आयी है। आंकड़ों के नजरिये से जनपद में देखें तो वर्ष 1997 में हुई 15वीं पशुगणना के अनुसार जनपद में कुल 10594 भेड़े थीं जिनमें संकर प्रजाति की भेड़ों की संख्या 1285 थी। वर्तमान में शंकर प्रजाति घटकर 45 हो गयी जबकि भेड़ों की संख्या घटकर 5982 हो गयी। ऐसे में भेड़ के ऊन से बना कंबल अब दुर्लभ हो गया है तो भेड़ के परिष्कृत ऊन की कीमतों में जबरदस्त उछाल आता जा रहा है। अब कृत्रिम ऊन ही बाजार में प्रचलन में है।

भेड़ का गोबर संतुलित उर्वरक है। इसीलिए पहले किसान भेड़ पालक का अनुनय कर जाड़े के दिनों में अपने खाली खेतों में भेड़ों को ठहराते थे। कृषि विभाग की मानें तो इसके गोबर में कम्पोस्ट खाद में पाये जाने वाले सभी तत्व होते है। कम्पोस्ट में नाइट्रोजन की कमी होती है पर भेड़ के गोबर में नाइट्रोजन के साथ ही तमाम अन्य आवश्यक कार्बनिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.
137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Bio Insecticide
- Mixture
- Bactericide
- Secondary Nutrients
- Wetting Agent
- Growth Promoters
- Zyme
- Bio Stimulants
- Tonic
- Bio Fungicide

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL
MR. ALOK BENIWAL
MOB: 9660258447

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

❏ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
❏ 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
❏HUMIC ACID
❏SEAWEED EXTRACT
❏AMINO ACID
❏POTASSIUM HUMATE
❏FULVIC ACID
❏EDDHA
❏NATCA
❏BRASSINOLIDE
❏DAP
❏SODA ASH
❏ SODIUM SULPHIDE
❏ AMONIUM CLORIDE
❏SODIUM BICARBONATE
❏CALCIUM CARBIDE
❏ PHOSPHORIC ACID
❏TRI SODIUM PHOSPHATE
❏CITRIC ACID
❏STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals
CONTACT NO.-022-6710-3722
EMAIL:aarti@hindchem.com

अरहर के प्रमुख कीटों एवं रोगों का समेकित प्रबन्धन

डॉ. रवि प्रकाश मौर्य, कार्यकम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बेडकर नगर,उ.प्र.
महेश सिंह, शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान, न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, फैजाबाद– 224 229

प्रस्तावना

अरहर का स्थान दालों में प्रमुख है, यह अपने प्रदेश में चने के बाद दूसरे स्थान पर है। यह फसल अकेली तथा ज्वार, बाजरा आदि के साथ सहफसली के रूप में बोई जाती है। अरहर में कीटों एवं रोगों का प्रकोप होता है जिसका समय से नियंत्रण करने से हानि से बचा जा सकता है। इसके लिए एकीकष्त / समेकित प्रबन्धन अपनाया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा। समेकित प्रबन्धन एक ऐसी प्रणाली है जिसमें फसलों को हानिकारक कीटों तथा बीमारियों से बचाने के लिए एक से अधिक तरीकों को प्राकष्तिक रूप से व्यवहारिक हो उसका उपयोग समुचित ढंग से किया जाता है। यदि किसान भाई समुचित ढंग से प्रमुख रोगों एवं कीटों की पहचान कर उसका निदान करें तो अरहर की अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

अरहर में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उसका प्रबन्धन

1. अरहर की फली मक्खीः–

पहचानः

यह छोटी चमकदार काले रंग की घरेलू मक्खी की तरह परन्तु आकार में छोटी होती है। इसकी मादा फलियों में बन रहे दानों के पास अण्डे देती है जिससे निकलने वाली गिडारें फली के अन्दर बन रही अविकसित मुलायम दानों को खाकर हानि पहुंचाती है। आर्थिक क्षति स्तर 5 प्रतिशत प्रकोपित फली है।

प्रबन्धनः

•गर्मी में अरहर के अवशेष पौधों को नष्ट करे दें।

•फसल की बुआई और कटाई समय से करनी चाहिए।

•आर्थिक क्षति स्तर पर इमिडाक्लोरोपिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. एक लीटर या एसिटामिप्रिड 20 डब्लू.पी., 150 ग्राम को 500 से 800 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से प्रभावित फसल पर छिड़काव करें।

2.फली छेदक कीट (हेलिकोवर्पा)

पहचानः

प्रौढ़ पतंगा पीले बादामी रंग का होता है अगली जोड़ी पंख पीले भूरे रंग के होते हैं तथा पंख के मध्य में एक काला निशान होता है। पिछले पंख कुछ चौड़े मटमैले सफेद से हल्के रंग के होते हैं तथा किनारे पर काली पट्टी होती है। सूड़िया हरे पीले या भूरे रंग की होती है तथा पार्श्व में दोनों तरफ मटमैले सफेद रंग की धारी पायी जाती है। इनकी गिडारे फलियों के अन्दर घुसकर दानों को खाकर हानि पहुचाती है। क्षतिग्रस्त फलियों में छिद्र दिखाई देता है, तथा छिद्रों के स्थान पर सूंड़ी का मल व जाला दिखाई देता है।

प्रबन्धनः

• कीट के निरीक्षण हेतु पांच गंधपास एवं प्रबंधन हेतु 20–25 गंधपास प्रति हेक्टेयर की दर से लगाकर नर प्रौढ़ कीटों को आकर्षित कर प्रति दिन प्रातः मार देना चाहिए। पुराने सेप्टर को 14 दिनों पर बदलते रहना चाहिए। 5–6 प्रौढ़ पतंगे औसतन प्रति गंधपास 2 से 3 दिन लगातार आने पर या 3 अंडे या 2–3 नवजात सूड़ी या एक पूर्ण विकसित सूंड़ी प्रति पौधा दिखाई देने पर या पांच प्रतिशत प्रकोपित फली होने पर एच.एन.पी.वी. 350 लार्वी समतुल्य को 300 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करना चाहिए या

•एजाडिरेक्टीन 2.5 लीटर को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए या

•फेनवेलरेट 20 ई.सी. का 750 मि.ली. अथवा साइपरमेंथिन 20 ई.सी. का 400 मिली. या इन्डक्साकार्व 14.5 एस.सी. 400 मिली. को 600 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

3. पत्ती लपेटक कीट

पहचानः

इस कीट की सूंड़ी हल्के पीले रंग की होती है तथा प्रौढ़ कीट (पतंगा) छोटा एवं गहरे भूरे रंग का होता है। इसकी सूड़िया 3–4 पत्तियों को लपेटकर सफेद जाला बुनकर उसी में रहती है और पत्तियों को खाती है। अगेती फसलों में फूलों एवं फलियों को भी नुकसान पहुचाती है।

प्रबन्धनः

देर से पकने वाली प्रजातियों में इस कीट के नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती है। जल्दी पकने वाली प्रजातियों में यह कीट फूल एवं फलियों को हानि पहुंचता है इसके लिये मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. 1.5 लीटर या इण्डोसल्फान 35 ई. सी. 1.5 लीटर को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

अरहर में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उसका प्रबन्धन

1.अरहर का उकठा रोग

लक्षण

यह फ्यूजेरियम नामक कवक से होता है। यह पौधों में पानी व भोज्य पदार्थों के संचरण को रोक देता है जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है और बाद

में पौधा पूरी तरह सूख जाता है। इसकी जड़े सड़कर गहरे रंग की हो जाती है एवं छाल हटाने पर जड़ से लेकर तने तक काली धारियों पायी जाती है।

प्रबन्धन

• गर्मी में गहरी जुताई करनी चाहिए।

• जिस खेत में उकठा रोग का प्रकोप अधिक हो उस खेत में 3–4 साल तक अरहर की फसल नहीं लेनी चाहिए।

• रोग मुक्त खेत से बीज का चुनाव करें।

• ज्वार और अरहर की सहफसली खेती करने से कुछ हद तक उकठा रोग का प्रकोप कम हो जाता है।

•रोग युक्त पौधे के उखाड़ कर जलावन के रूप में प्रयोग करें।

•बीज शोधन हेतु 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा विरिडी तथा एक ग्राम विटावैक्स प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से करें।

•कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत 1 ग्राम, थाइरम 50 प्रतिशत 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

• 2.5 किग्रा. ट्राईकोडर्मा माल्ट को 60–65 किग्रा. गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर एक सप्ताह बाद में प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय भूमि में मिला दिया जाय।

अरहर का बन्झा रोग

2. लक्षण

यह विषाणु जनित रोग है जिसका वाहक माइट होता है रोग ग्रसित पौधे में पत्तियॉ अधिक लगती है, पत्तियां छोटी तथा हल्के पीले रंग की हो जाती है। पौधे का आकार छोटा हो जाता है। शाखाएं हा घनी जाती है। फूल एवं फलियां नहीं बनती है।

प्रबंधन

• इस रोग का कोई प्रभावी रासायनिक उपचार नहीं है। अतः इस रोग से बचाव के लिये शस्य क्रियायें अति महत्वपूर्ण है।

•जिस खेत में अरहर बोना हो उसके आस–पास अरहर के पुराने एवं स्वयं उगे हुये पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।

•रोग रोधी किस्में ICPL-151 (जागषति) को बोना चाहिए।

•पौध से पौध एवं लाइन से लाइन की उचित दूरी बनाकर बोएं

•खड़ी फसल में प्रकोप होने पर माइट वेक्टर के लिये मेटा सिस्टास अथवा केल्थेन 0.1 प्रतिशत की मात्रा का छिड़काव करना चाहिए।

3. सूत्र कष्मि

सूत्र कष्मि छोटी–छोटी प्रायः आंख से न दिखाने वाली मष्दा में एवं पुराने अरहर के जड़ों में रहती है यह फसल उगने पर उसके जड़ से रस चूसकर पौधे का नुकसान करती है, जिससे पौधा पीला होकर सूख जाता है।

प्रबन्धन

इस बीमारी की रोकथाम हेतु गर्मी में गहरी जुताई आवश्यक है एवं खेत में 50 किग्रा. निवोली प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

फाइटोप्थोरा अंगमारी

लक्षण

यह रोग फाइटोप्थोरा ड्रेचस्केरी उपजाति कैजनी नामक कवक से होता है। रोग ग्रसित पत्तियों पर भूरे रंग के घब्बों का बनना तथा तने पर जमीन की सतह या एक से दो फीट की उंचाई पर पत्तियों का बनना है। बाद में तने का उपरी भाग सूख जाता है।

प्रबन्धनः

•पन्त अरहर–3, सिहोर–197, मालवीय अरहर–97 आदि रोग रोधी किस्मों को उगायें।

•प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।

•एप्रान या रिडोमिल 2 ग्राम/कि. ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

•रोगी फसल पर रिडोमिल एम जेड–75, 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

अरहर की फसल में एकीकष्त नाशी जीव प्रबन्धन

एकीकष्त नाशी जीव प्रबन्धन का अभिप्राय प्राकष्तिक पर्यावरण को ध्यान में रखते हुये उपस्थित नाशी जीवों को मिली जुली सुरक्षा विधि अपनाकर समुचित ढंग से प्रबन्धन करना है। अरहर की फसल हेतु निम्न क्रियाओं द्वारा रोग एवं कीटों से आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकता है।

•गर्मी में मिट्टी पलटने वाले हाल से गहरी जुताई करें।

•बीज का चुनाव स्वस्थ पौधों से करें।

•शोधित बीज ही बोयें।

•फसल चक्र अपनाएं।

•पौध से पौध एवं लाइन से लाइन की वांछित दूरी पर बुआई करें।

•कटाई के बाद अवशेष जड़ को नष्ट कर दें।

•रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें।

•खेत में लाइट प्रपंच लगाकर कीटों को नष्ट करें।

•खरपतवार एवं निराई–गुड़ाई समुचित रूप से करें।

•अरहर के खेत में चिड़ियों को बैठने के लिए बांस की लकड़ी का टी आकार का 10 खपच्ची प्रति हेक्टेयर के हिसाब से गाड़ दें।

•जब शत प्रतिशत पौधों में फूल आ गये हो और फली बनना शुरू हो गया हो उस समय मोनोक्राटोफास 36 प्रतिशत एस. एल. 1.25 लीटर को 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

•उकठा रोग के नियन्त्रण के लिये ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन करें।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए किसान भाई अरहर की खेती करें तो निश्चित ही उत्पादन के साथ ही साथ गुणवत्ता युक्त उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

उपलब्धियाँ नीम अनुसंधान की

नीम भारतीय उपमहाद्वीप का एक सदाबहार वृक्ष है यह एशिया, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और मध्य व दक्षिण अमेरिका के अनेक अन्य देशों में भी व्यापक रूप से उगता है। यह वृक्ष लवणीय व क्षारीय मि०ट्टी वाली भूमियों तथा अन्य बंजर भूमियों में आसानी से उग आता है। इसे वीथियों में, शोभाकारी वृक्ष के रूप में, कृषि वानिकी के लिए और सड़कों के किनारे छाया के लिए उगाया जाता है। सदियों से यह वृक्ष अपने औषधीय व कीटनाशी गुणों के कारण भारतीय जनमानस में आदर का पात्र रहा है। चिकित्सा की आयुर्वेद व यूनानी पद्धतियों में औषधियां तैयार करने के लिए इस वृक्ष के विभिन्न भागों का उपयोग किया जाता है। शायद ही कोई ऐसा रोग हो जिसके उपचार में नीम का उल्लेख न हुआ हो।

सदियों पुरानी प्रथा रही है कि भंडारित गेहूं, चावल व अन्य अनाजों में भृंगों, कीटों व अन्य नाशक जीवों से बचाव के लिए नीम की पत्तियों को कपडे में लपेट कर रखा जाता है। वर्तमान में, कृषि में नाशीजीव नियंत्रण के एजेंट के रूप में नीम की सशक्त भूमिका को स्वीकार किया गया है। विषैले कृत्रिम नाशकजीव नाशियों के हानिकारक प्रभावों के प्रति जनसामान्य की निरंतर बढती हुई चिन्ता

को ध्यान में रखते हुए नीम के उत्पादों को इन कृत्रिम नाशकजीव नाशियों का श्रेष्ठ विकल्प माना गया है। कृत्रिम नाशकजीव नाशियों से जुडी समस्याएं जैसे नाशकजीव प्रतिरोध, पर्यावरणीय संदूषण, खाद्य पदाथी, चारा और रेशों में विषाक्त अपशिष्ट, चिरकालिक आविषालुता, गैर लक्षित जीवों में व्यवधान आदि नीम पर आधारित नाशकजीव नाशियों के उपयोग से लगभग समाप्त ही हो जाती है। नीम पर किए गए आरंभिक अध्ययन मुख्यतया इसकी खली के नाशकजीव नाशी मानों के साथ इसके खाद संबंधी गुणों व मिट्टी की दशा को सुधारने से संबंधित थे। पिछली शताब्दी के 60 के दशक में संस्थान के रसायन विज्ञानियों ने नीम के कार्बनिक विलायकों में जैव सक्रिय रसायनों का उपस्थित होना सिद्ध किया। 1962 में संस्थान के कीट विज्ञानियों ने नीम के कीटनाशी गुणों की खोज की। यह पाया गया कि निबौलियों को पानी में घोलकर तैयार किया गया घोल प्रवासी व रेगिस्तानी टिड्डियों के आहार को अखाद्य बना देता है। इस घोल को जब 0.001 प्रतिशत की सांद्रता से 1962 में टिड्डियों के आक्रमण के दौरान जब संस्थान के खेतों में खडी फसलों पर छिडका गया तो उससे फसलों का टिड्डियों से सफलतापूर्वक बचाव हुआ। रेगिस्सतानी टिड्डियां खडी फसल पर बैठी तो जरूर लेकिन उन्हें आहार नहीं बना सकी। टिड्डियों के दल ने आसपास खडे नीम के वृक्षों पर भी आक्रमण नहीं किया। इन निष्कर्षीं से पूरी दुनिया का ध्यान नीम की ओर आकृष्ट हुआ तथा इसका उल्लेख रैकल कार्सन ने अपनी पुस्तक ''साइलेंट स्प्रिंग'' में मनुष्य व उसके पर्यावरण को कृत्रिम नाशकजीवनाशियों से होने वाले संभावित खतरों का जिक्र करते हुए किया।

नीम विभिन्न उपयोगी उत्पादों का बार-बार प्रयोग में लाया जाने वाला स्त्रोत है। इसका उपयोग औषधियों, साबुन बनाने, नाशकजीव नियंत्रण, नाइट्रीकरण निरोधक, धीमे पोषक तत्व विमोचित करने वाली खाद ,पशुओं के चारे, ईंधन ,उर्जा आदि के लिए किया जाता है। यह नाशीजीवनाशियों तथा संबद्ध उत्पादों का अकेला सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में उभरा है। इस वृक्ष के सभी भाग जैसे पत्तियां, फूल, फल, बीज, गिरी, छिलका, लकड़ी और टहनियां आदि जैविक रूप से सक्रिय होते हैं और इनमें सर्वाधिक उपयोगी नीम की निबौली होती है। नीम पर आधारित जैव नाशकजीव नाशी विविध सक्रियता के गुणों से युक्त होते हैं और गैर लक्षित जीवों के प्रति अपेक्षाकृत सुरक्षित होते हैं। कीटों, पादप सूत्रकृमियों, पौधों के रोगजनकों आदि के विरूद्ध अनेक क्रियाओं सहित नीम में व्यापक स्तर की सक्रियता देखी गई है। विश्वभर में नीम से 500 से अधिक नाशीजीव प्रजातियों का नियंत्रण होता है। कीटों के विरूद्ध इसके दीर्घकालिक प्रभाव विभिन्न प्रकार के खेत व घरेलू कीटो, नाशकजीवों, कृषि को संक्रमित करने वाले जीवाणुओं के विरूद्ध प्रभावी सिद्ध हुए हैं। कृषि में नीम के उत्पादों को धीमे नाइट्रोजन विमोचित करने वाले पदाथी और नाइट्रीकरण निरोधकों के रूप में उपयोगी पाया गया है।

बहुपयोगी वृक्ष...शीशम

शीशम बहुपयोगी वृक्ष है। इसकी लकड़ी, पत्तियाँ, जड़ें सभी काम में आती हैं। लकड़ियों से फर्नीचर बनता है। पत्तियाँ पशुओं के लिए प्रोटीनयुक्त चारा होती हैं। जड़ें भूमि को अधिक उपजाऊ बनाती हैं। पत्तियाँ व शाखाएँ वर्षा-जल की बूँदों को धीरे-धीरे जमीन पर गिराकर भू-जल भंडार बढ़ाती हैं।

शीशम के बीज दिसंबर-जनवरी माह में पेड़ों से प्राप्त होते हैं। एक पेड़ से एक से दो किलो बीज मिल जाते हैं। बीजों से नर्सरी में पौधे तैयार होते हैं। बीजों को दो तीन दिन पानी में भिगोने के बाद बोने से अंकुरण जल्दी होता है। इसलिए इन्हें 10 सेमी की दूरी पर कतार में 1-3 सेमी के अंतर से व 1 सेमी की गहराई में बोया जाता है। नर्सरी में बीज लगाने का उपयुक्त समय फरवरी-मार्च है। पौधों की लंबाई 10-15 सेमी होने पर इन्हें सिंचित क्षेत्र में अप्रैल-मई व असिंचित क्षेत्र में जून-जुलाई में रोपा जाता है। रोपों को प्रारंभिक दौर में पर्याप्त नमी मिलना जरूरी है। शीशम के पेड़ सड़क-रेल मार्ग के दोनों ओर, खेतों की मेड़, स्कूल व पंचायत भवन परिसर, कारखानों के मैदान तथा कॉलोनी के उद्यान में लगा सकते हैं। मालवा-निमाड़ के खंडवा-खरगोन जिलों तथा चंबल संभाग के श्योपुर क्षेत्र में इसे उगाया जा सकता है। पौधे रोपने के लिए पहले से ही १

फीट गोलाई व 1 फुट गहरा गड्ढा खोदकर उसमें पौध

शीशम बहुपयोगी वृक्ष है। इसकी लकड़ी, पत्तियाँ, जड़ें सभी काम में आती हैं। लकड़ियों से फर्नीचर बनता है। पत्तियाँ पशुओं के लिए प्रोटीनयुक्त चारा होती हैं। जड़ें भूमि को अधिक उपजाऊ बनाती हैं। पत्तियाँ व शाखाएँ वर्षा-जल की बूँदों को धीरे-धीरे जमीन पर गिराकर भू-जल भंडार बढ़ाती हैं।

शीशम के बीज दिसंबर-जनवरी माह में पेड़ों से प्राप्त होते हैं। एक पेड़ से एक से दो किलो बीज मिल जाते हैं। बीजों से नर्सरी में पौधे तैयार होते हैं। बीजों को दो तीन दिन पानी में भिगोने के बाद बोने से अंकुरण जल्दी होता है। इसलिए इन्हें 10 सेमी की दूरी पर कतार में 1-3 सेमी के अंतर से व 1 सेमी की गहराई में बोया जाता है। नर्सरी में बीज लगाने का उपयुक्त समय फरवरी-मार्च है। पौधों की लंबाई 10-15 सेमी होने पर इन्हें सिंचित क्षेत्र में अप्रैल-मई व असिंचित क्षेत्र में जून-जुलाई में रोपा जाता है। रोपों को प्रारंभिक दौर में पर्याप्त नमी मिलना जरूरी है।

शीशम के पेड़ सड़क-रेल मार्ग के दोनों ओर, खेतों की मेड़, स्कूल व पंचायत भवन परिसर, कारखानों के मैदान तथा कॉलोनी के उद्यान में लगा सकते हैं। मालवा-निमाड़ के खंडवा-खरगोन जिलों तथा चंबल संभाग के श्योपुर क्षेत्र में इसे उगाया जा सकता है।

पौधे रोपने के लिए पहले से ही 1 फीट गोलाई व 1 फुट गहरा गड्ढा खोदकर उसमें पौध मिश्रण भर दिया जाता है। पेड़ों के बीच कितनी दूरी रखी जाए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ की मिट्टी कैसी है व इन्हें किस स्थान पर लगाना है। हल्की मिट्टी में बढ़वार कम होती है। इसी प्रकार जहाँ सिर्फ शीशम की खेती करना हो, वहाँ ढाई से तीन मीटर की गहराई में लगाया जाता है। भारी मिट्टी वाले उपजाऊ खेतों की मेड़ पर इन्हें कम से कम पाँच मीटर की दूरी पर लगाया जाता है।

उपचार जरूरी

शीशम की लकड़ी भारी, मजबूत व बादामी रंग की होती है। इसके अंतःकाष्ठ की अपेक्षा बाह्य काष्ठ का रंग हल्का बादामी या भूरा सफेद होता है। लकड़ी के इस भाग में कीड़े लगने की आशंका रहती है। इसलिए इसे नीला थोथा, जिंक क्लोराइड या अन्य कीटरक्षक रसायनों से उपचारित करना जरूरी है।

लकड़ियाँ वजनी होती हैं

शीशम के 10-12 वर्ष के पेड़ के तने की गोलाई 70-75 व 25-30 वर्ष के पेड़ के तने की गोलाई 135 सेमी तक हो जाती है। इसके एक घनफीट लकड़ी का वजन 22.5 से 24.5 किलोग्राम तक होता है। आसाम से प्राप्त लकड़ी कुछ हल्की 19-20 किलोग्राम प्रति घनफुट वजन की होती है।

विनय भाई शाह (सूरत)

सुविचार

हमें सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्य भी एक दिन कमजोर होता है और बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी गलतियां करता है।

-महात्मा गांधी

बुद्धिमान आदमी धोखा और अपमान की बात किसी अन्य पर प्रकट नहीं करता।

-हितोपदेश

हसंते रहो!!

घोंचू (पड़ोसी से) : अंकल, मैं एक लड़की से प्यार करता हूं... कुछ समझ नहीं आ रहा क्या करूं...
अंकल : तो उसके बाप को कॉफी पिलाने ले जा और शादी की बात कर...
घोंचू : अंकल चलिए... कॉफी पीते हैं....

****

सेल्समेन - सर कॉकरोच के लिए पावडर खरीदोगे क्या???
घोंचू- नहीं बाबा नहीं! हम कॉकरोच को इतना लाड़-प्यार नहीं करते।
आज पावडर देंगे तो कल परफ्यूम मागेंगे।

शाश्वत कपिल

बनें बागवान

याद है, वो सर्द शाम की तल्खी दूर करने के लिए तुलसी की चाय पीना? या किसी ठिठुरती सुबह घर के बडे बुजुर्ग के हाथों भुने हुए आलू के जायके की सौगात मिलना? ताजी सब्जियों के बिना सर्दियों का मजा अधूरा है। लेकिन कई बार बाहर से खरीदी गई सब्जियां ताजी नहीं होतीं और कई बार महंगाई के चलते इन्हें खरीदना जेब पर भारी पडता है। ऐसे में क्यों न अपने घर के किसी कोने में ही किचन गार्डेन बना लिया जाए। थोडी सी मेहनत और टाइम मैनेजमेंट आपको आपकी पसंदीदा सब्जियां आसानी से उपलब्ध करा सकती है।

किचन गार्डेनिंग करने के लिए सबसे पहले यह तय करें कि आपके किचन में किन सब्जियों की खपत सबसे ज्यादा है। मसलन, अगर आपके घर के ज्यादातर लोग कम तीखा खाना खाते हैं, तो मिर्च के पौधे लगाने का कोई फायदा नहीं है। घर पर उगाई जाने वाली सब्जियों में मुख्य तौर पर तीन श्रेणियां हैं। पहली है लीफी वेजटेबल्स जिनमें पत्तागोभी, पालक, धनिया, ब्रॉकली, लेट्यूस, जुकिनी आदि सब्जियां आती हैं, दूसरी है विभिन्न प्रजातियों की शिमला मिर्च, तीसरी है रूट वेजटेबल्स जैसे शलगम, चुकंदर, गाजर, मूली और चौथी हैं जैसे करीपत्ता, पार्सले और तुलसी। जी हां बैंगन और हरी मिर्च के पौधे किसी भी मौसम में उगाए जा सकते हैं, वहीं हरी मटर और चेरी टमाटर जैसे पौधे सदियों में उगाना ज्यादा मुफीद रहता है।

ङङकिचन गार्डेन के लिए जगह का सही चुनाव और इस्तेमाल भी अहम है। अगर आप अपर फ्लोर पर रहते हैं और बालकनी में किचन गार्डेन बनाना चाहते हैं, तो गमलों या प्लांटेशन ट्रे का साइज और संख्या जगह की उपलब्धता के हिसाब से चुनें। उदाहरण के तौर पर अगर आपकी बालकनी में 5/10 फीट की जगह खाली है, तो आप यहां 45/15 सेंमी के चार ट्रे तक लगा सकती हैं। कम जगह में ज्यादा पौधे लगाने की गलती न करें। वरना उन्हें जरूरी पोषण नहीं मिल पाएगा। एक और खास बात यह है कि किचन गार्डेन की लोकेशन के हिसाब से वहां की समस्याएं भी अलग होती हैं, जिनसे निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। मसलन ग्राउंड फ्लोर के किचन गार्डेन में जानवरों और रोडेंट्स का खतरा होता है। इसी तरह बालकनी और टेरेस के किचन गार्डेन में मिट्टी के पोषक तत्व और धूप पर्याप्त मात्रा में न मिलने जैसी समस्याएं होती हैं। ऐसे में अगर आप ग्राउंड फ्लोर पर किचन गार्डेन बना रही हैं, तो फेंसिंग के पुख्ता इंतजाम करें। और बालकनी या टेरेस में किचन गार्डेन बना रही हैं, तो गमलों और प्लांटेशन ट्रेज को ऐसी दिशा में रखें कि उन्हें ज्यादा से ज्यादा सूरज की रोशनी मिले।

ङङपौधों की जरूरत से ज्यादा देखभाल करना भी कई बार खतरनाक साबित होता है। पौधों को दिन में दो बार पानी देना पर्याप्त है। जरूरत से ज्यादा पानी देने पर पौधों के गलने का खतरा रहता है। यही बात कीटनाशकों के इस्तेमाल पर भी लागू होती है। पत्तियों पर निशान होने का मतलब हमेशा यह नहीं होता कि उनमें कोई बीमारी पनप रही है। इसी तरह हर कीट पौधों को नुकसान पहुंचाने वाला ही नहीं होता। कई कीट पौधों के लिए लाभदायक भी होते हैं।

जिस तरह हम कोई बीमारी हो जाने पर पहले घरेलू नुस्खे आजमाते हैं, उसी तरह पौधों को कीडी लग जाने या बीमारी होने पर कुछ विशेष घरेलू नुस्खे बेहद कारगर साबित होते हैं। जैसे, पौधों में कीडे लग जाने पर नीम का तेल स्प्रे करने से फायदा होता है। पौधों में कोई बीमारी होने पर सबसे पहले उनमें हल्दी पाउडर डालें। कीडों से निजात पाने के लिए बीटी पाउडर भी डाल सकते हैं।

बागबानी का सामान बेचने वाले अकसर ज्यादा मात्रा में उत्पाद बेचने के लालच में लोगों को गलत जानकारी दे देते हैं। पौधों की किसी बीमारी का उपचार करने के लिए अगर केमिकल कीटनाशक का इस्तेमाल जरूरी हो तो विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें। अगर विशेषज्ञ ने एक लीटर पानी में दो एमएल दवा डालने को कहा है, तो इसी अनुपात में पौधों में दवा डालें। रोग जल्दी ठीक करने के चक्कर में एक लीटर पानी में दस एमएल दवा न डाल दें क्योंकि यह पौधे से उपजने वाली सब्जियों को हानिकारक बना देगा।

ङङ- अगर आपने पहली बार किचन गार्डेन बनाया है और आपके लगाए 8-10 में से 4-5 पौधे ही जिंदा रहें, तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। आपमें लगन होगी तो साल दर साल आपकी बगिया के पौधों की संख्या बढती ही जाएगी।

- सदिऱ्यों के मौसम में बीजों के रोपण का सही समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर तक होता है। वहीं अगर नर्सरी से पौधे लाकर लगा रही हैं, तो 15 नवंबर से 15 दिसंबर के बीच का समय उपयुक्त है।

- खाद देना बागबानी का एक अहम पहलू है। खाद हमेशा 3:1 के अनुपात में डालें। यानी तीन हिस्सा मिट्टी पर एक हिस्सा खाद।

मधु शर्मा

(पाक्षिक राशि फल)

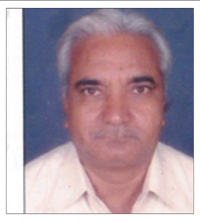

16–12–2013 से 31–12–2013

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	शारीरिक तथा मानसिक परेशानियाँ,छल कपट का योग,सावधानी रखें
BKT	लाभपूर्ण समय ,शारीरिक तथा मानसिक सुखो की प्राप्ति योग प्रबल,
CLU	परिवारिक ,आर्थिक ,परेशानियाँ ,स्त्रियों से असहयोग,के कारण परेशानियाँ ,
DMU	किसी मित्र के कारण संताप ,स्त्री से असहयोग,के कारण परेशानियाँ,
NEW	धन लाभ,जगह ज़मीन सम्बंधित लाभ तथा धर्म कर्म में रुचि बढ़ेगी !
FOX	निधि ,धन ,धर्म ,यश सम्मान की प्राप्ति योग,तथा जगह ज़मीन सम्बंधित लाभ की संभावना,
GPY	बीमारी ,ग्रह् कलह ,तनाव पूर्ण समय रहे,
HQZ	मित्रो से लाभ ,धन लाभ,व्यापार लाभ,तथा सुखद योग बनता है!
IR	शारीरीक कष्ट,मित्रों व सहयोगियों से विरोध का सामना,उद्वेग पूर्ण समय,

बहुउपयोगी: रवि-पुष्प

भारत में खाद्य तेल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है। इसकी पूर्ति के लिए ऐसी फसल की आवश्यकता है, जिसमें तेल का प्रश अधिक हो। रवि-पुष्प या सूरजमुखी इसके लिए एक उपयुक्त फसल हो सकती है। सूरजमुखी में तेल की मात्रा सोयाबीन की अपेक्षा दो से ढाई गुना तक है। यही नहीं इसे रबी, खरीफ व वसंत तीनों ही मौसम में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

सूरजमुखी का तेल स्वास्थ्य की दृष्टि से अन्य कई तिलहनों से बेहतर है, क्योंकि इसके तेल की संरचना ऐसी है जिससे शरीर में कोलेस्ट्रोल की मात्रा नहीं बढ़ती है। इसका उपयोग हृदय रोगियों के लिए भी डॉक्टरों द्वारा समर्थित किया जाता है। सूरजमुखी की छोटी सजावटी किस्में तो भारत में काफी समय से उगाई जाती रही हैं। परंतु बड़े पौधे व कम (एक दो) पुष्पों तथा अधिक तेल वाली किस्में सबसे पहले रूस से लाई गईं।

ये किस्में थीं पैरिडोविक (ईसी 68414) व अमीविस्किंज (ईसी 6845), वर्ष 1969-70 में देशभर में इस पर परीक्षण व प्रयोग किए गए। इनकी सफलता के मद्देनजर देशभर में इस पर अनुसंधान किए गए। फलस्वरूप अनेक उन्नत किस्में विकसित की गईं, इनके अलावा विभिन्न बीज उत्पादन संस्थाओं द्वारा विकसित की गई किस्में भी बाजार में उपलब्ध हैं। इनमें से भी कोई किस्म विश्वसनीय स्थान से प्राप्त की जा सकती है। एक उत्तम मध्यवर्ती विकल्प : खरीफ मौसम में ग्वार, चौला, भुट्टे के लिए मक्का, पशुओं के लिए जुवार, चरी आदि की कटाई के बाद अगस्त मे खेत खाली हो जाते हैं। कहीं-कहीं अधिक पानी या अन्य कारणों से भी खरीफ फसल खराब हो जाने पर अगस्त में खेत खाली हो जाते हैं। इस समय अन्य कोई भी फसल नहीं ली जा सकती हो, ऐसे में मध्यवर्ती फसल (मिड सीजन क्रॉप) के रूप में सूरजमुखी एक बेहतर विकल्प हो सकता है। दिवस अवधि से अप्रभावित फसल : सूरजमुखी की विशेषता है कि यह दिन की अवधि से प्रभावित नहीं होता है। इसीलिए इसकी बोवनी सिर्फ तीव्र गर्मी के महीनों को छोड़कर किसी भी मौसम में की जा सकती है। इस वजह से यह विभिन्न प्रकार की फसल, सब्जी आदि के साथ फसल चक्र में समायोजित किया जा सकता है।

सावधानी रखें

सूरजमुखी की कतारों व पौधों के बीच की दूरी मिट्टी व मौसम व किस्म के अनुसार रखी जाती है। उपजाऊ मिट्टी, देर से पककर तैयार होने वाली किस्मों व संकर किस्मों में दूरी अधिक यानी कतारों के बीच 60 सेमी का अंतर रखना उपयुक्त होगा। कमजोर भूमि, उन्नत किस्म व जल्दी पकने वाली किस्मों में पौधों की कतारों के बीच 45 सेमी दूरी रखी जाती है। एक ही कतार में 60 सेमी कतार दूरी के लिए पौधों के बीच 25 से 30 सेमी और 45 सेमी कतार दूरी के लिए पौधों के बीच 20-25 सेमी की दूरी रखी जाती है। पौधों की संख्या एक हैक्टेयर में 70 से 80 हजार तक होनी चाहिए। एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिए संकुल उन्नत किस्मों का 10-12 किग्रा व संकर किस्मों का 8 से 10 किग्रा बीज लग जाता है। बीज की गहराई वर्षाकाल के उत्तरार्द्ध में 2-3 सेमी व जायद तथा वसंत में 3-4 सेमी रखें। इसके बीजों में तेल होने के कारण फफूंद रोगों के लगने की संभावना अधिक रहती है। इसलिए बीजों को पाँच ग्राम ट्राइकोडर्मी विरिडि (प्रोटेक्ट) नामक जैविक फफूँदनाशक प्रति एक किग्रा बीज की दर से उपचारित करें। यह उपलब्ध न होने पर ब्रासीकॉल, थाइरम या केप्टान के ढाई ग्राम दवा प्रति एक किग्रा बीज के साथ मिलाकर बोएँ।

-ममता म्हात्रे

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः...
संस्था का नामः...
पूरा पताः...
ग्राम :...................................तहसील :..

जिलाः...................................राज्यः...........................पिन कोड

दूरभाष कार्यः..................................निवासः...................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 | तीन वर्ष :351 | पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :...................................

बैंक का नामः.................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.......................दिनांकः...............

स्थानः.................................. प्रतिनिधि का नामः.......................हस्ताक्षर सदस्यः...............

दिनांकः.......................

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर | एवं संस्था सील

मक्के और तिल की टिक्की

इस तेज सर्दी के मौसम के मुताबिक तिल और मक्का के आटा दोनों ही स्वास्थ्य के लिये फायदेमन्द हैं. आइये हम मक्के के आटे और तिल की टिक्की बनायें.

आवश्यक सामग्री

मक्का का आटा - 200 ग्राम (2 कप)
☐ गुड़ - 100 ग्राम 1/2 कप ,,पानी - 1/3 कप,तिल - 1/4 कपतेल - तलने के लिये

विधि -

मक्का के आटे को किसी बर्तन में छान कर निकाल लीजिये.

पानी और गुड़ को मिलाकर धीमी गैस पर गरम करें, चमचे से चलादें, गुड़ का गुड़ घुलने तक पानी गरम कर लीजिये. मक्का के आटे में, 1 बड़ा चम्मच तेल और तिल डाल कर मिला दीजिये. अब गुड़ के गरम घोल की सहायता से आटे को गूथ लीजिये. आटे को अच्छी तरह से मसल मसल 5-6 मिनिट तक और गूथिये, अगर थोड़े पानी की आवश्यकता हो तो डाल सकते हैं. गुथे आटे को 20 मिनिट के लिये रख दीजिये, ताकि आटा फूल कर सैट हो जाय.

गुथे आटे से थोड़ा थोड़ा आटा निकाल कर, छोटे नीबू के बराबर गोले बना लीजिये.

कढ़ाई में तेल डालकर गरम कीजिये. आटे के गोले को हथेली की सहायता से चपटा करके (टिक्की का आकार देकर) कढ़ाई में डालिये. 3-4 टिक्की कढ़ाई में डाल दीजिये और पलट पलट कर धीमी आग पर ब्राउन होने तक तलिये. तली हुई टिक्की प्लेट में निकाल कर रखिये. इसी तरह सारी टिक्की तल कर तैयार कर लीजिये.

मक्का तिल की टिक्की तैयार हैं.

अनुपमा कपिल

आवक तेज खरीद, मूँगफली का उठाव धीरे

बीकानेर खरीद मूँगफली का उठाव धीरे होने से आगे की खरीद व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। 12 बीघा कृषि मंडी स्थित सरकारी खरीद केंद्र पर अभी भी 60 हजार बोरी मूंगफली उठाव के अभाव में खरीद केंद्र पर पड़ी है। खरीद केंद्र पर मूँगफली रखने के लिए जगह नहीं होने से आगे की खरीद प्रभावित होने की संभावना बन गई है। खरीद एजेंसी के अधिकारी के मुताबिक 16 हजार बोरी मूँगफली की खरीद की गई थी। उधर पहले से ही 45 हजार बोरी मूँगफली खरीद केंद्र पर पड़ी थी। हालांकि अब मूंगफली के रखाव के लिए गोदाम मिल गया है। खरीद केंद्र पर पड़ी मूंगफली को जल्द से जल्द खारा स्थिति गोदाम पहुंचने की व्यवस्था की जा रही है ताकि आगे की खरीद सुचारू की जा सकें।

आमदनी बढाने के लिए कृषि आधारित व्यवसाय अपनाने होंगे–डॉ. धीरज सिंह

किसानों को अपनी आमदनी बढाने के लिए कृषि आधारित व्यवसाय अपनाने चाहिए। वर्तमान में खेती की जोत लगातार कम होती जा रही है। ऐसे में किसानों की खेती की लागत बढ रही है और आमदनी घट रही है। ऐसी स्थिति में किसानों को परम्परागत फसलें उगाने के साथ–साथ पशुपालन, मुर्गी पालन, आदि व्यवसाय को अपनाकर आमदनी बढानी चाहिए। किसानों को इतना सशक्त बनना चाहिए कि वे अपनी उपज के मूल्य निर्धारण में भूमिका निभा सकें। आजकल युवाओं का खेती में रूझान घट रहा है उन्हें खेती की तरफ आकर्षित करने के प्रयास करने चाहिए। भारत सरकार की कई योजनाऐं संचालित की जा रही हैं। युवाओं को उनका लाभ उठाना चाहिए। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय में 25 से 28 नवम्बर, 2013 तक झारखण्ड के किसानों के लिए आयोजित 4 दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर निदेशालय के कृषि डॉ. धीरज सिंह ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कही।

डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि लगभग 70 हजार हैक्टेयर जमीन झारखण्ड में धान की खेती के बाद खाली रहती है। वहाँ सरसों की खेती को परिस्थितियों के अनुसार बढावा दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि किसान भाई मिलकर सामूहिक रूप से खेती करें, छोटे–छोटे घ्घ्घ यंत्रों की खरीद करें, ताकि लागत में कमी की जा सके। उन्होंने उपयुक्त किस्मों का चयन, पानी की बचत हेतु फव्वारा सिंचाई, ऊसर भूमि में जिप्सम के प्रयोग की सलाह दी ।

फसलों को भारी पड़ रही सूर्य की तपिश

बीकानेर दुनियाभर के वैज्ञानिकों में जिस मुद्दे को लेकर बहस छिड़ी हुई है उससे अब बीकानेर भी अछूता नहीं रहा। प्रत्यक्ष रूप से जलवायु परिवर्तन का असर यहां भी हो रहा है। दिसंबर का पहला सप्ताह बीत रहा है लेकिन दिन और रात का तापमान अब भी सामान्य से अधिक है। उसका सीधा असर किसान और उनकी फसलों पर पड़ रहा है।दिन का तापमान ३० डिग्री सेल्सियस से अधिक होने के कारण हाल की रबी की बोई गई फसलों को प्रभावित कर रही हैं। अक्टूबर में जब सरसों की बिजाई शुरू हुई थी उस वक्त तापमान 35 डिग्री सेल्सियस के करीब था मगर बीच में पारा 40 डिग्री सेल्सियस पार पहुंच गया। नवंबर के अंतिम सप्ताह तक 40 डिग्री सेल्सियस के करीब तापमान रहा। नवंबर में जब गेहूं और जौ की बिजाई हुई तब भी तापमान ३५ डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा जबकि गेहूं के लिए दिन का अधिकतम तापमान 25 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए। अब तो दिसंबर शुरू हो गया और अब भी तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो रहा है। जो कोपलें फूट रही हैं वे गर्म रेत के कारण झुलस जाती हैं।

गेहूँ और लहसुन की बुवाई में लगे किसान

झालीजी का बराना-!- क्षेत्र में नहरी पानी की अ'छी आवक से चल रही है। इस साल अ'छी पैदावार के आसार को देखते हुए गेहूं का रकबा दुगुना होने की संभावना है।

इससे पहले सोयाबीन फसल चौपट होने से किसान चिंतित थे। अगली फसल में से किसानों ने गेहूँ और लहसुन की बुवाई शुरू कर दी है। किसानों का कहा कहना है कि रेलना से निपटने के बाद खेतों में गेहूँ की उराई जोरशोर अ'छे पैदावार की आस बनी है। वहीं क्षेत्र में एक माह पहले लगाए लहसुन की फसल में निडाई गुड़ाई करने की तैयारी तेज हो गई है।

विदेश जाता है मांडलगढ़ का संतरा

मांडलगढ़ संतरों की बात होते ही नागपुर का नाम याद आ जाता है। कभी नागपुर के संतरों की डिमांड जिलेभर में रहती थी, लेकिन अब संतरा उत्पादन में मांडलगढ़ का नाम प्रमुखता से लिया जाने लगा है। क्षेत्र में सर्वाधिक संतरा उत्पादन जोजवा में होता है। मांडलगढ़ क्षेत्र का संतरा श्रीलंका और बांग्लादेश तक जाने लगा है। क्षेत्र में पहले किसान मक्का, गेहूं, सरसों व चना आदि फसलों पर ध्यान 'यादा देते थे, लेकिन अब किसानों ने बागवानी करना शुरू कर दिया है। बागवानी में किसानों की पहली पसंद संतरा उत्पादन है। संतरा उत्पादन ऐसा होने लगा कि इससे किसानों की तकदीर बदल गई। बागवानी मिशन योजना के तहत सबसे पहले जोजवा गांव के किसानों ने संतरा उत्पादन की शुरुआत की। यहां के किसानों की तकदीर बदलती देख क्षेत्र के अन्य क्षेत्रों के किसानों ने भी संतरा के बगीचे लगाना शुरू कर दिए।

किसानों को तकनीकि संबंधी जानकारी दी

कुराली : किसानों को गेंहू की फसल से अधिक झाड लेने संबंधी किसान सिखलाई कैंप गांव मियांपुर चंगर में लगाया गया। कैंप के दौरान कृषि माहिरों ने किसानों को जानकारी मुहैया करवाई।

सहकारी सभा मीयांपुर चंगर के सहयोग से लगाए कैंप के दौरान जानकारों ने किसानों को परंपरागत फसल की बजाए बीज व तकनीक का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया।

गेहूँ की पहली सिंचाई बिजाई के 21 दिन बाद करें

अंबाला शहर : कृषि विज्ञानी डॉ. सुरेंद्र शर्मा ने किसानों का परामर्श दिया कि वे गेहूँ की बिजाई के 21 दिन बाद फसल में पहली सिंचाई करें और सिंचाई के उपरात कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श के उपरात जरूरत के अनुसार खरपतवारनाशकों का छिड़काव करें। प्रगतिशील किसान क्लब की मासिक बैठक में उन्होंने कहा कि बीज, खाद और दवाई का मात्रा से अधिक प्रयोग न केवल खेत की उत्पादकता को प्रभावित करता है बल्कि इसे कृषि लागत भी बढ़ती है किसान गन्ने, आलू और तोरिया इत्यादि की फसल से खाली हुए खेतों में डब्लूएच 1021, राज 3765, पीबीडब्लू 1973, यूपी 2338, पीबीडब्लू ५९० और एचडी 2932 इत्यादि गेहूं की किस्मों की बिजाई कर सकते हैं। पछेती किस्म एचडी 2851 में पीला रतुआ आने की संभावना अधिक रहती है। इसलिए किसानों को इस किस्म की बिजाई से परहेज करना चाहिए।

एकदम बढ़ा पानी, घटने पर मिली थी चेतावनी

बीकानेर पंजाब से राजस्थान का पानी एकाएक कम होने की खबर के बाद हरकत में आए नहर प्रशासन का असर इतना हुआ कि पंजाब से अब निर्धारित से अधिक पानी छोड़ दिया। नहरों को संभालने के लिए अतिरिक्त पानी को सूरतगढ़ ब्रांच में पानी छोडा पड़ा जबकि अभी इसकी वरीयता भी नहीं है।

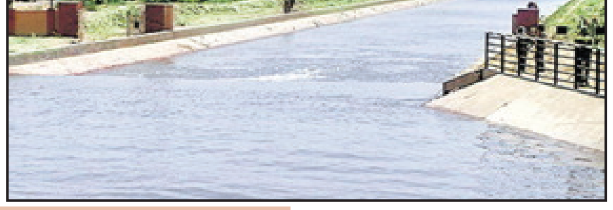

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

ममता (मुम्बई) 08898600347
गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599
महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863
जयदीप माथुर (गुड़गाँव) 09928960900
दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778
तारा मोहन (दिल्ली) 09582444313

बिजली में भी अग्रणी बना पंजाब : सुखबीर

पटियाला उपमुख्यमंत्री सुखबीर बादल ने कहा कि पंजाब अब सरपुस बिजली वाले राज्यों में शुमार हो गया है। पहले राज्य अनाज में अग्रणी कहलाता था, अब बिजली के मामले में भी अग्रणी बन गया। मिर्जापुर रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि एलएंडटी कंपनी के सहयोग से राज्य ने बिजली सरपुस की ओर पहला कदम बढ़ा दिया है। उन्होंने एलएंडटी को युवाओं के लिए विशेष रोजगार उपलब्ध कराने की जानकारी प्रदान करने वाला केंद्र स्थापित करने की अपील की। मौके पर मौजूद नवनिर्मित राजपुरा थर्मल प्लांट के कार्यकारी निदेशक एसएन राय ने इसको तुरंत स्वीकार कर लिया।

सब्जियों की बहार हिमाचल की बर्फीली वादियों में

केलांग (हिमाचल प्रदेश)। हिमाचल प्रदेश के सबसे बर्फीले इलाके, लाहौल घाटी में इन दिनों सब्जियों की बहार आई हुई है।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, यहां पैदा होने वाली मुख्य सब्जियों में बहुमूल्य और आकर्षक ब्रोकली तथा सलाद शामिल हैं। कृषि अधिकारी वी. के. चौधरी ने बताया कि हिमाचल की यह सुदूरवर्ती घाटी कभी रोगमुक्त उच्च गुणवत्ता वाले आलू के बीजों और कड़वे स्वाद वाले 'होप' फलों के लिए जानी जाती थी, और यहां मई से लेकर सिर्फ वर्ष के पांच महीने ही फसल ली जा सकती थी। चौधरी ने आगे बताया कि अब यह घाटी सब्जियों की खेती में काफी आगे निकल चुकी है। चौधरी ने कहा, 'यहां किसान अब आलू के बीजों और होप के बजाय फूलगोभी, शिमला मिर्च, बंदगोभी, ब्रोकली, मटर और सलाद जैसी सब्जियां उगाने लगे हैं। इन सब्जियों में उन्हें दोगुना मुनाफा मिल रहा है।' 'इस साल दिल्ली और चंडीगढ़ में मांग अधिक होने के कारण ब्रोकली की अच्छी कीमत मिली। गांव में यह 150 से 200 रुपया प्रति किलोग्राम की दर पर बिका।'

गोली मारकर नीलगाय की हत्या

रोहतक : काहनौर गाव में हरियाणा के राज्य पशु की गोली मारकर हत्या करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जाच शुरू कर दी। पुलिस ने नीलगाय के शव का पोस्टमार्टम कराया है। जानकारी के अनुसार चमनी निवासी रमेश ने थाना कलानौर पुलिस को दी शिकायत में बताया कि गांव निंदाना निवासी मछेछर व दो अन्य लोगों ने काहनौर के खेतों में दुनाली बंदूक से नीलगाय की गोली मारकर हत्या कर दी

पिसाई में चावल देने के मामले की जांच शुरू

जीटी रोड स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल में पिसाई के बदले मिड डे मील का चावल देने के मामले की जांच शुरू हुई। जांच अधिकारियों की टीम ३० किग्रा चावल व ४८ किग्रा किनकी देने के मामले की गंभीरता से जांच करेगी। विभाग जांच रिपोर्ट के आधार पर दोषियों के प्रति कार्रवाई करेगा।

सर्दी में मूँगफली महंगी

बिसाऊ. सर्दी शुरू होते ही कस्बे में मूँगफली की रेहडियां लगने लगी है। सर्दी से बचने के लिए लोग इसे चाव से खाते है, पर 45 रुपए थोक में मिलने वाली मूँगफली सिकाई किए जाने के बाद दोगुने दामों में बेची जा रही है।

इस बार मूँगफली की अ'छी फसल होने के बाद भी इन के भाव में तेजी है इस बार इसकी अच्छी

पैदावार हुई है। थोक में 45 रुपए प्रति किलो के भाव बिक रही है, लेकिन इसकी सिकाई ((सेकने)) के बाद 100 से 120 रुपए प्रति किलो के भाव बेचा जा रहा है। अब सिकाई करने के लिए केरोसिन नहीं मिलने के कारण एक बोरी मूँगफली सेकने के लिए चार लीटर डीजल खर्च हो जाता है।

50 फीसदी मछलियों के दाम गिरे

भीलवाड़ा जलाशयों का पानी सिंचाई के लिए छोडा सी व डी क्लास के मछली ठेकेदारों के लिए परेशानी बन गया। जलस्त्रोतों में पानी की कमी होती देख ठेकेदार मछलियां निकाल बेचने लगे हैं। इससे बाजार में अचानक मछली की आवक बढ़ गई। इससे मछली दाम औंधे मुंह गिर गए। दाम में करीब 50 फीसदी तक की कमी आई है। ठेकेदारों को 15 से 20 रुपए प्रतिकिलो का नुकसान उठाना पड़ रहा है। अभी स्थिति ऐसी है कि तालाबों से मछलियां निकालने के लिए मजदूर भी नहीं मिल रहे हैं, जो मिल रहे उन्होंने मजदूरी बढ़ा दी है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com